॥ श्री ॥

अथ अनुक्रमणिका

नम्बर	नाम	पाना
१	मङ्गलाचरण	
२	णमोकार सामायक लेणे की पाटी तथा चोवीसो	४
३	सामायक पारणे की पाटी तिख्खुतो पंचपद वंदना	७
४	चौरासी लख योनि तथा चोवीस जिन नाम ...	९
५	पचीस बोल को थोकड़ो	११
६	हित शिक्षा के पचीस बोल	२८
७	पाना की चरचा	३३
८	तेरा द्वार	७३
९	बावन बोल को थोकड़ो	१०३
१०	जाणपना का २५ बोल	१२१
११	देव गुरु धर्म की संक्षेप ओलखना	१२९
१२	लघुदण्डक	१४१
१३	९८ बोलां की अल्पा बोहत	१६९
१४	श्रावक को प्रतिक्रमण अर्थ सहित	१७२
१५	प्रतिक्रमण करने की विधि	१७९
१६	तेरापन्थी ओलखणा की ढाल सोही तेरापन्थ पावै हो	२०३
१७	ढाल स्वामी श्री भीखणजी कृत प्राणी समकित बिन विधि पाई रे	२०६
१८	ढाल इण भरतक्षेत्र में चेत चतुर नर तेरापन्थी निरिपाजी	२०८
१९	ढाल तीन बोलां करि ओलखें जी	२०९
२०	ढाल राग भैरवी में श्री कालुगणी स्तवन ...	२१३
२१	गतागति को थोकड़ो	२१५
२२	दूजो गतागति को थोकड़ो	२१८
२३	गणी गुण महिमा स्तवनम्	२२९

॥ मंगलाचरणम् ॥

॥ दोहा ॥

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध, आचारज उवझाय ।
साधु सकल के चरणकूं, वन्दूं शीश नमाय ॥ १ ॥
महा मन्त्र ए शुद्ध जपूं, प्रात समय सुखकार ।
विघन मिटै संकट कटै, वरतै जय जयकार ॥ २ ॥
सुमरूं श्री भिक्षु गुरु, प्रबल बुद्धि भंडार ।
तासु प्रसादे पामिये, समकित रतन उदार ॥ ३ ॥

ढाल (चाल नाटक की)

सुख पावे तूं प्यारे जांया ढाल गणिन्द गुण गावे । एदेशी ॥
सुज्ञन का पूरवन का प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का । आंकड़ी ॥

बिन पढ़ियां अघ घड़िया टोला, फुन पशु सम
घन वन का ॥ प्यारे पढ़ो ज्ञान श्री जिन का ॥ १ ॥

सम्यक् ज्ञान सव्यां यो प्रगटै मिटै भ्रान्ति सब
मन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ २ ॥

तत्व पदारथ अर्थ खोलखे, रागी होय शासन का
॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ३ ॥

काल अनादि मिथ्यातम निशिवत्, अब ज्ञानादित
दिन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ४ ॥

पाप पिस पक झेल त्रस थग्, ये खिम खिम बचपन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ५ ॥

श्री कालू गणिराज प्रसादे (कहै) गुलाब आब चरचन का ॥ प्यारे पढ़ो० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री भिक्षु स्मरण ॥

दयां देव ओन को श्रीसार मयो राजी ॥ एदेशी ॥
श्री भिक्षु सुमरि भिक्षु सुमरि भिक्षु सुमरि भाई ॥
भिक्षु नाम ठाम २ सुख में करांई । श्री भिक्षु ॥ ए आंकड़ी ॥

पाले सुध संयम पाल । टाल अयोलोम टाल ।
भिक्षा ले निरवर माल । जिनन्द ज्यं फरमाई ॥श्री॥१॥
लेइ भिक्षु नाम धार । पवरावे ए पञ्चम आर ।
कुगुरु कुदेव छार । शिव राह को बताई ॥श्री॥२॥
दया अनुकम्पा ठीक । कियां शिव गति नजीक ।
एह जिन धर्म मांय । न कर धुरताई ॥श्री॥३॥
दया दया मुख पुकार । न कर हिंसा प्रचार ।
अठ राग मोह टार । पाल्या गुण अथाई ॥श्री॥४॥
धर्म जिन आब मांय । कदापि न बाहर थाय ।
नर भव ए दुर्लभ पाय । समझ थां बड़ाई ॥श्री॥५॥
चमदम अंतरङ्ग मांय । पाल्या जिम धर्म थाय ।
स्वदम मु शरम मांय । विपाक्ष में ठकुराई ॥श्री॥६॥

कुपात्र कुक्षेत्र जेम । पोख्यां हुवै धर्म केम ।
सुपात्र में राख्य प्रेम । निर्दूषण बहिराई ॥धी॥७॥
आगम अनुकूल देख । इत्यादिक पाखो लेख ।
व्रत धर्म अव्रत शेष । सुगम एह कताई ॥धी॥८॥
पञ्च व्रत संयम भार । पालन पलावन उदार ।
देव गुरु धर्म सार : रत्न श्री सभाई ॥धी॥९॥
शुद्ध श्रद्धवन्त जेह । सुगुरु विनय करत तेह ।
अनहून नरी री वदेह । सुफल री पढाई ॥धी॥१०॥
समकित करमै शताब । निज गुन की वट्टे चाव ।
भिटु नाम कर्हैं गुमाव । संकट ने सराई ॥धी॥११॥

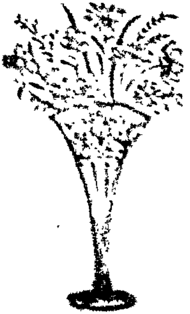

॥ श्री ॥

णमो अरिहन्ताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरि-याणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

॥ अथ सामायक लेणे की पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं (मुहूर्त एक) पज्जुवासामि दुविहं तिवि-हेणं मणेणं वायाए कायाए न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥

॥ अथ चौवसिथो की पाटियां ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं इरिया वहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उत्तिङ्ग पणग दग मट्टी मक्कडा सन्ताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया एगिन्दिया बेइन्दिया तेइन्दिया चउ-रिन्दिया पंचिन्दिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघा-इया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणा उट्ठाण संकामिया जीवियाउ । ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सोत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि करेमि काउसग्गं, अणत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जम्भाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलिये पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्ग सञ्चालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एव माइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिउ हुज्जमे काउसग्गो, जाव अरिहन्ताणं भगवन्ताणं, नमो कारेणं नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं, वोसिरामि ॥

ध्यानमें ॥ इच्छामि पडिक्कमिउ की पाटी मन में गुणकर एक नमोकार गुण के पारलेवो।

॥ अथ लोगस्स की पाटी ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजीयं च वन्दे, सम्भव मभिणंदणं च, सुमइं च पउमप्पहंसुपासं जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जंच, विमलमणन्तं च जिणं

मयन्त मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नाम धेयं ठाणं सम्पत्ताणं नमो जिणाणं ।

॥ सामायक पारणे की पाटी ॥

नवमा सामायक व्रत के विषे ज्यो कोई मतिचार दोष लागो हुवे तो मालोऊं सामायक मण पूरी पारी होय, पारवो विसार्यो होय, मन वचन काया का जोग माठा प्रवरताया होय, सामायक में राजकथा, देश कथा, स्त्री कथा, भत्त कथा, करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

तिक्खुत्तो मयाहीणं पयाहीणं वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं पज्जु वासामि मत्थेण वन्दामि ।

॥ अथ पंचपद वन्दना ॥

पहिले पद श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (वीस) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसहसाठ) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी पञ्चमहाविदेह खेत्रां के विषे विचरै है मनन्त ज्ञान का धणी मनन्त दर्शण का धणी मनन्त बल का धणी एक हजार माठ लक्षण का धारणहार चौसठ इन्द्रों का पूजनीक,

आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

पञ्चमें पद मांहरा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्री श्री १०८ श्री श्री तुलसीरामजी स्वामी (वर्त्तमान आचारज को नाम लेणो) जघन्य दोय हजार कोड़ साधू साध्वी उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधू साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेतां में विचरे छे ते महा उत्तम पुरुष किहवा छे, पञ्च महाव्रत का पालणहार, छव काया ना पीहर, पञ्च सुमति सुमता, तीन गुप्ति गुप्ता, बारे भेदे तपस्या का करणहार, सतरे भेदे संजम का पालणहार, बावीस परीषहका जीतणहार वयालीस दोष टाल आहार पाणी का लेवणहार, बावन अणाचार का टालणहार, सतावीस गुण संयुक्त, निर्लोभी, निरलालची, सचित्त का त्यागी, अचित्त का भोगी, संसार से पूठा, मोक्ष से म्हामां, अस्वादी त्यागी वेरागी, तेड़िया आवे नहीं, नोंतियां जीमें नहीं, वायरा नीं परे अप्रतिबन्ध विहारी इसा महापुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

॥ अथ चौरासी लाख योनि ॥

७ लाख पृथ्वीकाय ७ लाख अप्पकाय ७ लाख तेउकाय ७ लाख वायुकाय १० लाख प्रत्येक वनस्पति

काय १४ लाख साधारण वनस्पति काय २ लाख बेन्द्री २ लाख तेन्द्री २ लाख चौन्द्री ४ लाख नारकी ४ लाख देवता ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्री १४ लाख मनुष्य की जाति ए च्यार गति, चौरासी लाख जीव योनि से वारम्वार खमत खामना होज्यो ।

॥ अथ चौवीस तीर्थङ्करों

१

२

३

४

५

६ छट्ठा

७ सातवां

८

११ इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी ।
१२ बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी ।
१३ तेरमां श्री विमलनाथ स्वामीजी ।
१४ चौदमां श्री अनन्तनाथ स्वामीजी ।
१५ पन्दरमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी ।
१६ सोलमां श्री शान्तिनाथ स्वामीजी ।
१७ सतरमां श्री कुंथुनाथ स्वामीजी ।
१८ अठारमां श्री अरनाथ स्वामीजी ।
१९ उगणीसमां श्री मल्लिनाथ स्वामीजी ।
२० वीसमां श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामीजी ।
२१ इकवीसमां श्री नमिनाथ स्वामीजी ।
२२ बाईसमां श्री अरिष्टनेमिनाथ स्वामीजी ।
२३ तेवीसमां श्री पार्श्वनाथ स्वामीजी ।
२४ चौवीसमां श्री महावीर स्वामीजी ।

॥ पच्चीस बोल ॥

१ पहिले बोले गति चार ४

नरकगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजे बोले जाति पांच ५

एकेन्द्री, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री

सत्य मन जोग १ असत्य मन जोग २ मिश्र
मन जोग ३ व्यवहार मन जोग ४

४ च्यार वचन का
सत्य भाषा १ असत्य भाषा २ मिश्र भाषा ३
व्यवहार भाषा ४

७ काया का
औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३
वैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक
मिश्र ६ कार्मण जोग ७

८ नवमें बोलि उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान
मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३
मन पर्यव ज्ञान ४ केवल ज्ञान ५

३ तीन अज्ञान
मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञान २ विभङ्ग
अज्ञान ३

४ च्यार दर्शन
चक्षुदर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन ३
केवल दर्शन ४

१० दशमें बोलि कर्म आठ ८
ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शनावरणी कर्म २ वेदनी

कालो १ पीलो २ नीलो ३ रातो ४ धोलो ५

घ्राणइन्द्री की दोय विषय

सुगन्ध १ दुर्गन्ध २

रसइन्द्री की पांच विषय

खट्टो, १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्री की आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५

चिकणूं ६ ठण्डो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकार की मिथ्यात्व

१ जीवनें अजीव सरदहै ते मिथ्यात्व

२ अजीवनें जीव सरदहै ते मिथ्यात्व

३ धर्मनें अधर्म सरदहै ते मिथ्यात्व

४ अधर्मनें धर्म सरदहै ते मिथ्यात्व

५ साधूनें असाधू सरदहै ते मिथ्यात्व

६ असाधूनें साधू सरदहै ते मिथ्यात्व

७ मार्गनें कुमार्ग सरदहै ते मिथ्यात्व

८ कुमार्गनें मार्ग सरदहै ते मिथ्यात्व

९ मोक्ष गयानें अमोक्ष गयो सरदहै ते मिथ्यात्व

१० अमोक्ष गयानें मोक्ष गयो सरदहै ते मिथ्यात्व

१४ चौदमें बोले नव तत्व जाणपणो तींका ११५

एक सौ पन्दरा बोल

९ बोले जीव का

सूक्ष्म एकेन्द्री का दोय भेद

१ पहिलो अपर्यापतो २ दूसरो पर्यापतो

बादर एकेन्द्री का दोय भेद

३ तीजो अपर्यापतो ४ चौथो पर्यापतो

बेइन्द्री का दोय भेद

५ पांचवों अपर्यापतो ६ छट्ठो पर्यापतो

तेइन्द्री का दोय भेद

७ सातवों अपर्यापतो ८ आठवों पर्यापतो

चौइन्द्री का दोय भेद

९ नवमों अपर्यापतो १० दशमों पर्यापतो

असन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद

११ इग्यारमों अपर्यापतो १२ बारमों पर्यापतो

सन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद

१३ तेरमों अपर्यापतो १४ चवदमों पर्यापतो

१० बोले अजीव का भेद

धर्मास्तिकाय का ३ भेद

खन्ध, देश, प्रदेश

अधर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

आकाशास्तिकाय का ३ भेद

खन्ध, देश प्रदेश

काल को दशमूं भेद (ये दश भेद अरूपी छे)

पुद्गलास्तिकाय का च्यार भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लेणपुन्ने ३ सयणपुन्ने ४ वत्थपुन्ने ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७ कायापुन्ने ८ नमस्कार पुन्ने ९

१८ पाप अठारे प्रकार—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० आस्रव का—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७

वश करे ते संवर १५ मन वश करे ते संवर १६ वचन वश करे ते संवर १७ काया वश करे ते संवर १८ भंडउपगरणमेलतां भजयणा न करे-ते संवर १९ सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निर्जरा बारे प्रकारे—

अणशण * १ उणोदरी + २ भिक्षाचरी ३ रस परित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलिषणा ६ प्रायश्चित ७ विनय ८ वेयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग ÷ १२

४ बन्ध च्यार प्रकारे—

प्रकृतिबन्ध १ स्थितिबन्ध २ अनुभागबन्ध ३ प्रदेश बन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे—

ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४

१५ पन्दरह में बोले आत्मा आठ—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शन आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

---

* अणशण=उपवासादिक + उणोदरी=कम खाना
÷ विउसग्ग=निवर्तवो तथा कायोत्सर्ग

१८ अठारमें बोले दृष्टि ३ तीन—

सम्यक्‌दृष्टि १ मित्थ्या दृष्टि २ समभित्थ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोले ध्यान ४ च्यार—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्ल ध्यान ४

२० बीसमें बोले षटद्रव्य को जाण पणो

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलां ओलखीजे— द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत थी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गल ने हालवा, चालवा को सहाय, अधर्मास्तिकाय नें पांचा बोलां ओलखीजे—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत थी लोक प्रमाणे कालथकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी गुण थी थिर रहवा नों सहाय, आकाशास्तिकाय नें पांच बोल करी ओलखीजे—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत थी लोक अलोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी भाजन गुण, काल नें पांचां बोलां ओलखीजे—द्रव्य थी अनन्त द्रव्य, खेत थी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी वर्त्तमान गुण पुद्गलास्तिकाय ने पांच बोल थीः ओल-

राखवा का त्याग करे ।

६ छठा व्रत के विषे श्रावक दशों दिशि में मर्याद उपरान्त जावा का त्याग करे ।

७ सातवां व्रत के विषे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छवीस छै जिणारी मर्याद उपरांत त्याग करे तथा पन्दरे कर्मादान की मर्याद उपरान्त त्याग करे ।

८ आठमां व्रत के विषे श्रावक मर्याद उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे ।

९ नवमां व्रत के विषे श्रावक सामायक की मर्याद करे ।

१० दशमां व्रत के विषे श्रावक देसावगासी संवर की मर्याद करे ।

११ इग्यारमें व्रत श्रावक पोषह करे ।

१२ बारमें व्रत श्रावक शुद्ध साधु निर्ग्रन्थ ने निर्दोष आहार पाणी आदि चउदह प्रकार नो दान देवे ।

२३ तेईसमें बोले साधुजी का पंच महाव्रत—

१ पहिला महाव्रत मे साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं, करावे नहीं, करता ने भलो जाणे नहीं, मन से वचन से काया से ।

करावूं नहीं कायसा, ६ अनुमोदूं नहीं मनसा, ७ अनुमोदूं नहीं वायसा, ८ अनुमोदूं नहीं कायसा ९

आंक १२ बारमा का भांगा ९—

एक करण दोय जोग सें, करूं नहीं मनसा वायसा, १ करूं नहीं मनसा कायसा, २ करूं नहीं वायसा, कायसा, ३ कराऊं नहीं मनसा वायसा, ४ कराऊं नहीं मनसा कायसा, ५ कराऊं नहीं वायसा कायसा ६ अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, ७ अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, ८ अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ९

आंक १३ का भांगा ३ तीन—

एक करण तीन जोग सें, करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, १ कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ३

आंक २१ का भांगा ९—

दोय करण एक जोग सें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, १ करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा २ करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, ३ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, ४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, ५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा, ६ कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, ७

नहीं अनुमोदूं नहीं वायमा २ करूं नहीं
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायमा ३

आंक ३२ बत्तीस का भांगा ३ तीन—

तीन करण दोय जोग से, करूं नहीं कराऊं
नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायमा १ करूं
नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा
कायमा २ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं
नहीं वायसा कायमा ३ ।

आंक ३३ तेतीस को भांगो १ एक—

तीन करण तीन जोगसे करूं नहीं कराऊं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनमा वायमा कायमा ।

२५ पचीस में बोले चारित्र पांच—

सामायिक चारित्र १ छेदोपस्थापनीय चारित्र २
पड़िहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र
४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति पचीस बोल सम्पूर्णम् ॥

५ ए पांच आस्रव द्वार हैं इनको सेना सेवाना और अनुमोदने में एकान्त पाप है।

९ सब से पहले हर एक काम में परमात्मा परमेश्वर को याद करो जिससे तुम्हारा हृदय शुद्ध होय।

१० जिसके पास संसारिक इल्म सीखे वह संसारिक गुरु यानि उस्ताद और जो संसारमयी समुद्र से तैरने का उपाय बतावें वही तरण तारण, तथा श्रमण धर्म या श्रमणोपासक धर्म जिससे अङ्गीकार करें वही धार्मिक गुरु।

११ गुरु का अविनय करने से गुण नहीं आते हैं। आखिर में उनका पढ़ना व्यर्थ होता है, जैसे वेश्या का शृङ्गार, वैसे अवनीत का पढ़ना एकसा है

१२ बुरा काम अगर कोई छिपके भी करेगा तो क्या है आखिर जाहिर में आवेहीगा इसलिये बुरा काम नहीं करना चाहिये जवानी दिवानी है जो धर्म करना हो वो करने में आलस नहीं करना चाहिये।

१३ गुण जाने उसको गुण सिखलाना, दान सुपात्र को देना, उपदेश सबको करना, नेकी बुरे और भले दोनं के साथ करना, यह गुणवानों का काम है।

सो ज्ञानी ४ स्थिर चित रक्खे सो ध्यानी ५ इन्द्रियां दमे सो शूरा ६ पर उपकार करै सो पूरा ७ गुणवन्तों का गुण गावे सो गुणवान ८ निर्धन से नेह करे सो पुन्यवान ९ ।

० इति ०

॥ अथ पाना की चरचा ॥

१ जीव रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपी कि अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं ही, किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ये च्यारुं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपी कि अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही है ।

४ पाप रूपी कि अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल ते रूपी ।

५ आस्रव रूपी कि अरूपी, अरूपी, ते किणन्याय

४ पाप सावद्य कि निरवद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव सावद्य कि निरवद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव ये च्यार तो एकान्त सावद्य छै शुभ जोगां से निर्जरा होय जिण आसरी निरवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संवर सावद्य कि निरवद्य, निरवद्य छै, ते किण-न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

७ निरजरा सावद्य कि निरवद्य, निरवद्य छै ते किण-न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

८ बन्ध सावद्य कि निरवद्य, दोनूं नहीं, ते किणन्याय अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष सावद्य कि निरवद्य, निरवद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवन्त थया ते निरवद्य छै।

॥ लड़ी तीजी आज्ञा मांहि वाहर की ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कि वाहिर, दोनूं छै, ते किण न्याय, जीव का चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै खोटा परिणाम आज्ञा वाहिर।

२ अजीव आज्ञा मांहि कि वाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै।

॥ छट्ठो चौथो जीव चोर के साहूकार ॥

१ जीव चोर के साहूकार, दोनूं है, जिणन्याय जीवरा परिणामां साहूकार है मांठा परिणामां चोर है ।

२ अजीव चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, जिणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे है अजीव है ।

३ पुन्य चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव है ।

४ पाप चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव है ।

५ आस्रव चोर के साहूकार, दोनूं है जिणन्याय च्यार आस्रव तो चोर है, अने अशुभ जोग पण चोर है, शुभ जोग साहूकार है ।

६ संवर चोर के साहूकार साहूकार है, जिणन्याय, जीव रा भला परिणाम साहूकार है ।

७ निर्जरा चोर के साहूकार साहूकार है, जिणन्याय जीव रा भला परिणाम साहूकार है ।

८ बंध चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव है ।

९ मोक्ष चोर के साहूकार साहूकार, जिणन्याय [illegible] हुवा ते साहूकार है ।

॥ छट्ठो सातमो जीव अजीव को ॥

१ जीव ते जीव है के अजीव है जीव, जिणन्याय [illegible]

७ निरजरा छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय देश थो कर्म तोड़े देश थी जीव उज्वल थाय ते निरजरा छे ते आदरवा जोग छे।

८ बन्ध छांडवा जोग कि आदरवा जोग, छांडवा जोग छे ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नों बंध छांडवा जोग हो छे।

९ मोक्ष छांडवा जोग कि आदरवा जोग, आदरवा जोग छे, ते किणन्याय सकल कर्म खपावे, जीव निरमल थाय, सिद्ध हुवे, इणन्याय आदरवा जोग छे।

॥ षटद्रव्य पे लड़ी सातमी रूपी अरूपी की ॥

१ धर्मास्तिकाय रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्तिकाय रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपी कि अरूपी, अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपी कि अरूपी, रूपी, [illegible]
पावे इणन्याय।

६ जीव रूपी कि अरूपी, अरूपी, [illegible]
नहीं पावे इणन्याय।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी आठमी [illegible]

१ धर्मास्ति काय सावद्य के [illegible]
अजीव है।

२ अधर्मास्ति काय सावद्य के [illegible]
अजीव है।

३ आकाशास्ति काय सावद्य के [illegible]
अजीव है।

४ काल सावद्य कि निर्वद्य [illegible]

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्य [illegible]
अजीव है।

६ जीवास्तिकाय सावद्य [illegible]
परिणाम सावद्य [illegible]

॥ छव द्रव्य [illegible]

१ धर्मास्तिकाय [illegible]
ते किणन्याय [illegible]
अर्थ [illegible]

५ पुद्गल चोर के साहूकार.

६ जीव चोर के साहूकार. य, पुन्य परिणाम धांसरी चोरहै

साहूकार छै। कणान्याय

छव द्रव्य पर लहो

१ धर्मास्तिकाय जीव गान्याय

२ अधर्मास्ति काय जीव

३ आकाशास्ति काय काण-

४ काल जीव के

५ पुद्गलास्ति काय य,

६ जीवास्ति काय

छव द्रव्य पर याय

१ धर्मास्ति काय

न्याय द्रव्य ? होय,

२ अधर्मास्ति करता

द्रव्य

३ आकाशास्ति

अनेक

४ काल

३ कर्म सावद्य कि निर्वद्य ? दोनूं नहीं अजीव छै।

४ कर्म चोर कि साहूकार ? दोनूं नहीं अजीव छै

५ कर्म आज्ञा मांहि कि बाहर ? दोनूं नहीं अजीव

६ कर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग, छांडवा [illegible] छै।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ? ज्ञा[illegible] वरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च[illegible] कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत्र, [illegible] ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

॥ लड़ी २० वीसमो ॥

१ धर्म जीव कि अजीव ? जीव छै।

२ धर्म सावद्य कि निर्वद्य ? निर्वद्य छै।

३ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर ? श्री वीतराग दे[illegible] आज्ञा मांहि छै।

४ धर्म चोर कि साहूकार ? साहूकार छै।

५ धर्म रूपी कि अरूपी ? अरूपी छै।

६ धर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? आद[illegible] जोग छै।

७ धर्म द्रव्य कि भाव ? दोनूं [illegible], जिवद्रव्य[illegible] [illegible] छै, द्रव्य भाव अजीव छै।

७ सामायक पुन्य कै पाप ? दोनूं नहीं, क्रियान्याय पुन्य पाप अजीव है, सामायक जीव है।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव कै अजीव ? जीव है।
२ सावद्य सावद्य कै कै निरवद्य ? सावद्य है।
३ सावद्य आज्ञा मांहि कै बाहर ? बाहर है।
४ सावद्य चोर कै साहूकार ? चोर है।
५ सावद्य रूपी कै अरूपी ? अरूपी छै।
६ सावद्य छांडवा जोग कै आदरवा जोग ? छांडवा जोग छै।
७ सावद्य पुन्य कै पाप ? दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै सावद्य जीव छै।

॥ लड़ी २४ चौवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव कै अजीव ? जीव छै।
२ निरवद्य सावद्य कै निरवद्य ? निरवद्य छै।
३ निरवद्य चोर कै साहूकार ? साहूकार छै।
३ निरवद्य आज्ञा मांहि कै बाहर ? मांहि छै।
५ निरवद्य रूपी कै अरूपी ? अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग ? आदरवा जोग है।

७ निरवद्य धर्म कि अधर्म ? धर्म है।

८ निरवद्य पुन्य कि पाप ? पुन्य पाप दोनूं नहीं, किण्न्याय ? पुन्य पाप तो अजीव है, निरवद्य जीव है।

॥ लड़ी २५ पच्चीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ ? अने अजीव कितना पदार्थ ? जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो जीव है, अने अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार पदार्थ अजीव है।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना ? जीव अने आस्रव ये दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं है अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ये सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ये तीन पदार्थ निरवद्य है।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना ? जीव, आस्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण है, अने आज्ञा बाहर पण

७ छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना? एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै।

॥ लड़ी २७ सत्ताइसमी ॥

१ पुन्य धर्म कि अधर्म? दोनूं नहीं, किणन्याय? धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म कि अधर्म? दोनूं नहीं, किणन्याय? धर्म अधर्म जीव छै, पाप अजीव छै।

३ बंध धर्म कि अधर्म? दोनूं नहीं, किणन्याय? धर्म अधर्म तो जीव छै, बंध अजीव छै।

४ कर्म अने धर्म एक कि दोय? दोय छै, किणन्याय कर्म तो अजीव छै, धर्म तो जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक कि दोय? दोय छै, किणन्याय? पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

धर्म अने अधर्मास्ति एक कि दोय? दोय, किणन्याय? धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

अधर्म अने धर्मास्ति एक कि दोय? दोय, किणन्याय? अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

धर्मास्ति अने अधर्मास्ति एक कि दोय? दोय

किणन्याय ? धर्मास्ति को तो चालता नो सह
है, अने अधर्मास्ति नो थिर रहवा नो सहाय है

९ धर्म अने धर्मी एक कि होय ? एक है, किणन्याय ?
धर्म जीव का चोखा परिणाम है ।

१० अधर्म अने अधर्मी एक कि होय ? एक है, किण-
न्याय ? अधर्म जीव का खोटा परिणाम है ।

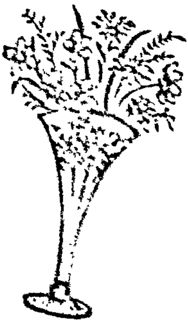

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहार थी पांचमूं, साधू ने पूछे तो छट्ठो।

१२ विषय कितनी पावे—२३ तेवीस।

१३ मिथ्यात्व नां दश बोल पावे के नहीं, व्यवहार थी नहीं पावे।

१४ जीव का चौदा भेदां में से किसो भेद पावे, १ एक चौदमूं पर्याप्तो सन्नी पंचेन्द्री को पावे।

१५ आतमां कितनी पावे—श्रावक में तो ७ सात पावे, अने साधू में आठ पावे।

१६ दण्डक किसो पावे—एक इसवीसमूं।

१७ लेश्या कितनी पावे—६ छव।

१८ दृष्टि कितनी पावे—व्यवहार थी एक सम्यक् दृष्टि पावे।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, शुक्ल ध्यान टाल के।

२० छव द्रव्य में किसा द्रव्य पावे—१ एक जीव द्रव्य।

२१ राशि किसी पावे—एक जीव राशि।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावे।

२३ साधू का पञ्च महाव्रत पावे के नहीं—साधू में पावे श्रावक में पावे नहीं।

पर्याय कितनी पावे	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावे, स्पर्श इन्द्री बल-प्राण १ काय बल २ श्वासोश्वास बल ३ आयुषो बल प्राण ४।

८ पाणी ओसादि अप्प कायका प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्प काय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नि तेउकाय नां प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायुकाय का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति

श्वासो श्वास बल प्राण	४
आउखो बल प्राण	५
भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	तेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण बध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि चौइन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	चौ इन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इन्द्री बल प्राण और वध्यो

इन्द्रियां कितनी	५ पांचों ही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवनी
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पृच्छा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं
प्राण कितना	७। श्वास लेवे तो उश्वास नहीं

१८ सन्नी मनुष्य की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१० दश

तुमे सन्नी के असन्नी ? सन्नी, किण न्याय ? मन छै।
तुमे सूक्ष्म कि बादर ? बादर, किण० ? दीसूं छूं।
तुमे त्रस कि स्थावर ? त्रस, किण ? हालूं चालूं छूं।

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानक में नीपजे

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे तिणारी पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१३ नारकी का नेरिया की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

५ मनुष्य में वेद कितना पावे—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजे जिणां में तो वेद एक नपुंसक ही पावे छै. सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजे जिणां में वेद तीनों ही पावे छै ।

६ नारकी में वेद कितना पावे—एक नपुंसक वेद ही पावे छै ।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर या पांच प्रकार का तिर्यञ्चा में वेद कितना पावे—छमो-र्छम उपजे ते असन्नी छै जिणां में तो वेद नपुं-सक ही पावे छै, अने गर्भ में उपजे ते सन्नी छै जिणां में वेद तीनों ही पावे छै ।

८ देवता में वेद कितना पावे—उत्तर भवनपति वाणव्यन्तर जोतिषी, पहिला दूजा देवलोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावे छै, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुष ही छै ।

९ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना—उगणीस दण्डक का जीवां में तो कर्म आठ ही पावे छै, अने मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावे छै ।

१ धर्म व्रत में के अव्रत में—व्रत में ।

११ साधु जी ने सूझतो निर्दोष आहार पाणी दियां काईं होवै व्रत में कि अव्रत में—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधे छै, १२ में व्रत छै।

१२ साधुजी ने असूझतो दोष सहित आहार पाणी दियां काईं होवै तथा व्रत में कि अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजे ठाणे में कह्यो छै अल्प आयु बंधे अकल्याणकारी कर्म बंधे तथा असूझतो दोषी ते व्रत में नहीं, पाप कर्म बंधे छै।

१३ अरिहन्त देव देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधु नो वंदना करै कि नहीं करै—करै साधु नो अवश्य पूजनीक छै।

१६ साधु देवता नो वंदना करै कि नहीं करै—नहीं करै

१७ सिद्ध भगवान देवता कि मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म कि बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रस कि स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी कि असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान परीता कि अपरीता—दोनूं नहीं।

॥ इति प्रश्न उत्तर समाप्त ॥

क्रियन्याय, उ० श्रीनिशीथ सूत्र के १२ वारमें उद्देशे में कह्यो छै अनुकम्पा करी तस जीव बांधे बन्धावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित आवे, तथा साधु संसारी जीवां की सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्त्तव्य त्याग दिया ।

संसारी कर्मा सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै, सूक्ष्म अने बादर, त्रस ने स्थावर, सन्नी अने असन्नी तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे भेद जीवनां, चौबीस दण्डक, इत्यादिक अनेक भेद जाणवा, चेतन गुण ओलखवानें सोनारो दृष्टान्त कहे छै, जिम सोनारो गहणों भांजी भांजी नें और और आकारे घड़ावे तो आकार नो विनाश थाय पण सोनारो विनाश नहीं, तैसे कर्मां का उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुण को विनाश नहीं।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति तिणमें च्यारां की पर्याय पलटै नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटे ते ओलखवानें सोनारो दृष्टान्त कहे छै—जिम कोई सोनारो गहणों भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों विनाश होय, सोनारो विनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं। पुन्य ते शुभ कर्म पाप ते अशुभ कर्म ते पुन्य पाप ओलखवानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहे छै, कदेक जीव के पथ्य आहार घटै और अपथ्य

३ पाणी आवे ते छिद्र ज्यों कर्म आवे ते आस्रव

४ इम कह्यां थकां कोई कर्म अने आस्रव एक सरधे तेहनें दोय सरधावा ने चौथो कारण कहे छै।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

२ मनुष्य अने बारणों दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

३ पाणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय।

५ विशेष ओळखवा ने पांचमूं कारण कहे छै।

१ पाणी आवे ते नालो पण पाणी नालो नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

२ मनुष्य आवे ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

३ पाणी आवे ते छिद्र पण पाणी छिद्र नहीं ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

इम रोके ने संवर ने संवर ने ओळखवा ने तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ तळाव रो नालो रूंधे ज्यों जीव रे आस्रव रूंधे ते संवर।

२ हवेली रो बारणो रुंधे ज्यों जीव रे आस्रव रुंधे ते संवर।

३ नाव रे छिद्र रुंधे ज्यूं जीव रे आस्रव रुंधे ते संवर।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देश थी उज्वल थाय ते निर्जरा ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ तालाव रो पाणी मोरियादिक करी ने काढ़े ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़े ते निर्जरा।

२ हवेली रो कचरो पूंजी ने काढ़े ज्यों भला भाव प्रवर्तावी ने जीव कर्म रूपियो कचरो काढ़े ते निर्जरा।

३ नाव को पाणी उलेची २ ने काढ़े ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़े ते निर्जरा।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुया ते बंध, ते ओलखवा ने छव बोल कहे

१ पहिले बोले कहो स्वामीजी आदि ए बात मिले

बोल्या न मिले। प्रश्न—क्यूं न मिले. गुरु बोल्या ए उपनो नहीं।

२ दूजे बोले कहो स्वामीजी पहलो जीव और पाछे कर्म ए बात मिले? गुरु बोल्या नहीं मिले। प्रश्न—क्यों न मिले. उ०—कर्म विना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवे नहीं यों न मिले।

३ तीजे बोले कहो स्वामीजी पहलो कर्म अने पछे। जीव ए मिले? गुरु कहे नहीं मिले। प्रश्न—क्यों न मिले, गुरु कहे कर्म कियां विना हुवे नहीं, तो जीव बिना कर्म कुण किया।

४ चौथे बोले कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिले? गुरु कहे न मिले। प्र०—किण न्याय? उ०—जीव, कर्म यां दोयां ने उपजावण वालो कुण।

५ पांचमें बोले जीव कर्म रहित छै ए बात मिले? गुरु कहे न मिले। प्रश्न—किण न्याय? उ०—ए जीव कर्म रहित होवे तो करणी करवा री रुप (चूंप) कुण करे मुक्ति गयो पाछो आवे नहीं।

६ छठे बोले कहो स्वामीजी जीव अने कर्मनों मिलाप किण विधि थाय छै गुरु कहै अपच्छानु पूर्वी पणे अनादि कालसे जीव कर्म रो मिलाप चल्यो आय है

1

॥ तीजो कुण द्वार कहे छे ॥

जीव चेतन छव द्रव्यां में कोण नव पदार्थों में कोण ? छव द्रव्यां में तो एक जीव नव पदार्थों में पांच। जीव १ आस्रव २ संवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५।

अजीव अचेतन छवमें कोण नवमें कोण—छवमें ५ नवमें ४ छवद्रव्यां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण—छव में एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बन्ध ३

पापते अशुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण—छव में एक पुद्गल, नव में तीन, अजीव १ पाप २ बन्ध ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छव में कोण नव में कोण—छवमें जीव, नवमें जीव १ आस्रव २

कर्मा रो करता कोण कीधा होवे ते कोण करता तो जीव कीधा हुवा ते कर्म

कर्मा रो उपाय ते कोण उपना ते कोण—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मा ने लगावे ते कोण लाग्या हुवा ते कोण—लगावे ते जीव लागे ते कर्म

कर्मा ने रोके ते कोण रुक्या ते कोण—रोके तो जीव, रुक्या ते कर्म

कर्मा ने तोड़े ते कोण तूट्या ते कोण तोड़े ते जीव तूट्या ते कर्म

कर्मा ने बांधे ते कोण बंन्धा ते कोण—बांधे ते जीव बंधिया ते कर्म ।

कर्मा ने खपावे ते कोण खपे खयघया ते कोण—खपावे ते जीव खयघया ते कर्म

० इति तृतीय द्वारम् ०

॥ अथ चौथो आत्म द्वार कहे छे ॥

जीव चेतन ते आत्मा छे अनेरो नहीं ।

अजीव अचेतन आत्मा नहीं अनेरो छे ।

आत्मारि काम आवे छे पण आत्मा नहीं, कोण कोण काम आवे ते कहे छे—

छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामी काल जीव छो जीव रहसी इणन्याय।

अजीवने अजीव किणन्याय। कहिजे, गयेकाल अजीव छो वर्त्तमान काल अजीव छै, आगामी काल अजीव छो अजीव रहसी।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहिजे, पुन्य तै शुभ कर्म छै, कर्म तै पुद्गल छै, पुद्गल तै अजीव छै।

पाप ने अजीव किणन्याय कहिजे, पाप तै अशुभ कर्म छै, कर्म तै पुद्गल छै, पुद्गल तै अजीव छै।

आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे, आस्रव तै कर्म ग्रहै छै, कर्मां रो करता छै, कर्मां रो उपाय छै उपाय तै जीव छो छै।

१ मिथ्यात्व आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे विपरीत सरधान तै मिथ्यात्व आस्रव छै तै जीवरा परिणाम छै।

२ अव्रत आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे, पच्चखाण मात्र तै जीवरो आशा वांछा अव्रत आस्रव छै तै जीवरा परिणाम छै।

३ प्रमाद आस्रवने जीव किणन्याय कहिजे, उयउत्साह पणो ते प्रमाद आस्रव छै ते जीवरा परिणाम छै।

४ कषाय आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे, कषाय आत्मा कही छै, कषाय ते जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै।

जोग आस्रव ने जीव किणन्याय कहिजे जोग आत्मा कही छै जोग ते जीवरा परिणाम छै तीनूं ही जोगांरो व्यापार जीवरो छै।

संवर ने जीव किणन्याय कहिजे सामाई पचखाण संयम, संवर, विवेक, विउसग, ए छउं आत्मा कही छै, वलि चारित आत्मा कही छै, चारित जीवरा परिणाम छै इणन्याय।

निजरा ने जीव किणन्याय कहिजे, भला भाव प्रवर्तावीने जीव देशथी उज्वलो हुवै ते जीव छै।

बंध ने अजीव किणन्याय कहिजे, बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल ते अजीव छै।

मोक्षने जीव किणन्याय कहिजे? समस्त कर्म मूंकावे ते मोक्ष कहिजे निर्वाण कहिजे सिद्ध भग-

मिथ्यात्व आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छै।

अव्रत आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे। ? अणउछाहपणों ते प्रमाद आस्रव छै, जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै, जीवते अरूपी छै।

कषाय आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? श्रीठाणांग दश में ठाणें जीव परिणामीरा दश भेदां में कषाय परिणामी कह्यो छै, अने ज्ञान दर्शन चारित्र परिणामी कह्या छै, ए जीव छै तिम कषाय परिणामी जीव छै, कषायपणें परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छै, जीव छै, जीवते अरूपी छै।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? तीनों ही जोगांरो उठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? अठारे पाप ठाणारो विरमण अरूपी छै।

निर्जरा ने अरूपी किणन्याय कहिजे ? कर्म तोड़वारो बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

बंधने रूपी किणन्याय कहिजे ? बंधते शुभा

॥ अथ आठमूं भाव द्वार कहे छे ॥

भाव ५ पांच—उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनो अने उदय निपन्नरा दोय भेद—जीव उदय निपन्न १, दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २, तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहे छे, च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेश्या १६, च्यार कषाय २०, तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४, अव्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८ संसारता २९, असिद्ध ३०, अकेवली ३१, छद्मस्थ ३२, संजोगी ३३ ।

हिवे जीवरे अजीव उदय निपन्नरा ३० तीस भेद ते कहे छे पांच शरीर ५, पांच शरीर रे प्रयोगे परिणम्यां द्रव्य, ५ पांच वर्ण, २ दोय गंध, ५ पांच रस, ८ आठ स्पर्श एवं तीस ।

उपशमरा दोय भेद—एक तो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव, उपशम तो एक मोह कर्मरो होय,

मोहनीय कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामैं. ४ च्यार चारित, एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि

अन्तराय कर्मरो क्षयोपशम होवै तो आठ बोल पामैं ५ पांच लब्धि, तीन वीर्य ।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामी १, अनादिया परिणामी २, अनादिया परिणामिकरा १० दश भेद तिणमैं ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि, सातमूं लोक, ८ आठमूं अलोक, ९ नवमूं भवी, १० दशमूं अभवी। अनै सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा। गाम नगर गड़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जाणवा—

जीव आश्री जीव परिणामिकरा १० दश भेद, ते कहै है—

गति परिणामी १, इन्द्रिय परिणामी २, कषाय परिणामी ३, लेश्या परिणामी ४, जोग परिणामी ५, उपयोग परिणामी ६, ज्ञान परिणामी ७, दर्शन परिणामी ८, चारित्र परिणामी ९, वेद परिणामी दश १०.

हिवै जीव आश्री अजीव परिणामीरा १० दश भेद कहै है—

बन्धन परिणामी १, गई परिणामी २, संठाण परिणामी ३, भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गंध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्पर्श परिणामी ८ अगुरु लघू परिणामी ९ शब्द, परिणामी १०।

जीव में भाव पावे ५ पांचूंही।

अजीव पुन्य पाप बन्ध में भाव एक परिणामिक।

आस्रव भाव दोय—उदय, परिणामिक

संवर भाव ४ च्यार, उदय वरजी नै

निर्जरा भाव ३ तीन, क्षायक, क्षयोपशम परिणामिक।

मोक्ष भाव २ दोय क्षायक, परिणामिक।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ अथ नवमं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी, गुण आठ, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुख। एक एक गुणांरी अनन्त अनन्त पर्याय।

ज्ञाने करी अनन्ता पदार्थ जाणे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

दर्शने करी अनन्ता पदार्थ सरधै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनन्ती पर्याय।

वीर्यनी अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणै देखै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेश सूं अनन्त पुद्गलिक सुख वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय। वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्म सुख प्रगटे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

दुख अनन्त पाप प्रदेश सूं अनन्त दुख वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

अजीव ना पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहे छे—

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानो साझ

द्रव्य तो निर्जरा गुण देश थकी कर्म प्रदेश तोड़ी ने जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश टूटे तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो बन्ध, गुण जीव ने बांध राखवा रो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधे तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश क्षय हुवां अनन्त सुख प्रगटे तिण सूं अनन्ती पर्याय ।

॥ इति नवम द्वारम् ॥

॥ अथ दशमूं द्रव्यादिकरी ओलखान द्वार ॥

जीव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, क्षेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी, गुण थी चेतन गुण ।

अजीव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, क्षेत्र थी लोकालोक

कने काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थकी कर्म रोकवा रो गुण ।

निर्जरा ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अकाम निर्जरा का तो अनन्ता द्रव्य, सकाम निर्जरा का असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी कर्म तोड़वा रो गुण ।

बन्ध ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत थकी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी कर्म बांध रखवा रो ।

मोक्ष ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत थकी जीवां कने, काल थकी एकेक सिद्धांरी आदि अन्त नहीं, एकेक सिद्धांरी आदि है पण अन्त नहीं, भाव थकी अरूपी, गुण थकी आत्मिक सुख ।

धर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने चालवा रो साझ ।

अने निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै। अजीव आज्ञा मांहि कि बाहर ? अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं. ते किणन्याय ? अजीव है, अचेतन छै, जड़ छै।

पुन्य, पाप, बन्ध, ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं, अजीव छै।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय ? आस्रवना पांच भेद—मिथ्यात १, अव्रत २, प्रमाद ३, कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहर है। जोग आस्रव का दोय भेद—शुभ जोग वर्तता निर्जरा हुवे तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि छै। अशुभ जोग आज्ञा बाहर छै।

संवर आज्ञा मांहि है, ते किणन्याय ? संवर थी कर्म रुके ते श्री वीतराग की आज्ञा मांहि है।

निर्जरा आज्ञा मांहि है, ते किणन्याय ? कर्म तोड़वारा उपाय श्री वीतराग की आज्ञा में है।

मोक्ष आज्ञा मांहि है, ते किणन्याय ? सकल कर्म खुपावरी श्री वीतराग की आज्ञा है।

॥ इति एकादशम् द्वारम् ॥

देश थकी कर्म तोड़ी, देश थकी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा आदरवा जोग छै।

बंध ने छांडवा जोग किणन्याय कहिजे ? शुभाशुभ कर्म जीव के बंध रह्या छै ते बंध तो छांडवा ही जोग छै।

मोक्ष ने आदरवा जोग किणन्याय कहिजे ? समस्त कर्म लूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै।

॥ इति द्वादशम् द्वारम् ॥

॥ अथ तेरमूं तलाव द्वार कहे छै ॥

तालाव रूपी जीव जाणवो। तलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो। निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवो। नाला रूप आस्रव जाणवो। नाला बंध रूप संवर जाणवो। मोरी करी ने पाणी काढ़े ते निर्जरा जाणवो। मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

यह तेरा द्वार तन्त किया श्रीभीखनजी संत

॥ इति तेरा द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ अथ बावन बोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोले ८ आत्मा में कर्मां रो करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं है ।
४ ज्ञान, चारित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य है ।

६ छठे बोले आठ आत्मा में जाणे किसी ? देखे किसी ? सरधै किसी आत्मा ?
जाणे तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखे उपयोग आत्मा, सरधे दर्शन आत्मा, कला जाणै उपयोग आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोके चारित्र आत्मा, तोड़े जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्मा छै ।

७ सातमे बोले उदय का ३३ (तेतीस) बोलां में सावद्य किता ? निर्वद्य किता ?
१६ सोले बोल तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, ते कहे छै च्यार गति ४, छव काय १०, असन्नी ११, अज्ञानी १२, संसारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६ ।
३ तीन भली लेश्या निर्वद्य है ।
१२ बारे सावद्य है, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७, तीन वेद १०, मिथ्यात्वी ११, अव्रती १२

२ आहारता, संयोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्म ना उदय से ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल. ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म का उदय से ।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्म का उदय से हिवे आत्मा कहै छै ।

१७ सतरे बोल तो अनेरी आत्मा—
च्यार गति ४, छव काय १०, अव्रती ११, असन्नी १२, अन्नाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६, छद्मस्थ १७ ।

८ आठ बोल जोग आत्मा—
छव लेश्या ६, आहारता ७, संयोगी ८ ।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा ।

३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरी कहै ।

१ मिथ्याती दर्शन आत्मा ।

१० दशमें बोले जीव ने जीव जाणे यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणे ते किसे भाव ? क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक, ए तीन भाव ।

११ इग्यारमें बोले जीव ने जीव जाणे, यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणे, ते किसी आत्मा ? उपयोग अने ज्ञान आत्मा ।

उदय निपन्न द्रव में कोण, नव में कोण ?—द्रव में जीव, नव में जीव आस्रव। उपशम निपन्न द्रव में कोण ? नव में कोण ?—द्रव में जीव, नव में जीव, संवर। क्षायक निपन्न, द्रव में कोण ? नव में कोण ?—द्रव में जीव, नव में ४ जीव संवर, निर्जरा, मोक्ष। क्षयोपशम निपन्न द्रव में कोण ? नव में कोण ?—द्रव में जीव, नव में ३ जीव, संवर, निर्जरा।

परिणामिक निपन्न द्रव में कोण ? नव में कोण ?—द्रव में द्रव नव में नव।

१५ पंदरमें बोले आठ कर्मनों उदय, द्रव में, नव में कोण ?—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्मनों उदय तो द्रव में पुद्गल; नव में तीन—अजीव, पाप; बंध। वेदनी नाम गोत आयु ए च्यार कर्मनों उदय द्रव में पुद्गल नव में च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

१६ सोलमें बोले मोहनीय कर्मनों उपशम द्रव में कोण ?—नव में कोण ? द्रव में पुद्गल, नव में तीन, अजीव, पाप, बंध। बाकी सात कर्मनों उपशम होवे नहीं।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव निर्जरा। एक मोहनीय कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव संवर निर्जरा। बाकी च्यार अघातिक कर्म को छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्म रो तो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं। ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म को क्षयोपशम निपन्न तो छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा। मोहनीय कर्म को क्षयोपशम निपन्न छव में जीव, नव में जीव, संवर निर्जरा।

१८ अठारमें बोले आठ कर्म नों बंध आदि सत्ता किसे किसे गुण ठाणें—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम, गोत ए पांच कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से दशमां गुण ठाणां ताईं।

मोहनीय कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से नवमां गुण ठाणां ताईं।

आयु कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से सातमां ताईं। तीजो गुण ठाणों टाली।

वेदनी कर्म नों बंध तेरमां गुण ठाणां ताईं।

मोहनीय नों उपशम निपन्न तो चौथा से इग्यारमा तांई चारित्र मोहनीय को इग्यारमें गुण ठाणे ही। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षायक निपन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणै तथा श्री सिद्ध भगवान में। दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा तांई। अनें चारित्र मोहणी को बारमा से चौदमा तांई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि।

वेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म नों क्षायक निपन्न गुण ठाणां में पावे नहीं, श्री सिद्ध भगवान में पावे।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमा गुण ठाणां तांई।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुण ठाणां तांई।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुण ठाणां तांई।

च्यार अघाति कर्म नों क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं।

पावै कषाय, जोग, मन, वचन, काया, ए पांच आश्रव। इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावै कषाय टल्यो। चौदमें आस्रव पावै नहीं। हिवै संवर के बीस बोलां की विगत—पहिला से चउथा गुणठाणां तांई तो संवर पावै नहीं, पांचवें गुणठाणे एक समकित संवर पावै, सम्पूर्ण व्रत तो संवर पावै नहीं।

देश व्रत पावै ते लेख्यो नहीं।

छट्ठे गुणठाणे २ (दोय) पावै समकित, व्रतते, सातमा से दशमा गुणठाणां तांई १५ (पंद्रह) संवर पावै: अकषाय, अजोग, मन, वचन, काया ए पांच टल्या।

इग्यारमें से तेरमें गुणठाणां तांई १६ सोलह संवर पावै, अजोग, मन, वचन, काया, ए च्यार टल्या।

चौदमें गुणठाणे २० बीसूंही संवर पावै।

२२ बाईसमें बोलें चौदा गुणठाणां किस्यो भाव किसो पावा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणें तो भाव तीन—उदयभाव क्षयोपशमिक, पारिणामिक भाव। चौथे

गुणठाणो भाव च्यार—उदय, वरजीने आत्मा, दर्शन।

पाचमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम-परिणामिक, आत्मा देशचारित्र।

छट्टा से दशमा गुणठाणां तांई भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र। इग्यारमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम पारिणामिक आत्मा क्षायक चारित्र।

बारमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा क्षायक चारित्र।

तेरमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा अनेरी।

२३ तेवीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसो आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली, आत्मा तीन, दर्शन, चारित्र, जोग। अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन।

२४ चौवीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसो आत्मा।

दया भाव ४ (च्यार) उदय वरजी ने, आत्मा २ (दोय) चारित, जोग।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग, छव में नवमें का बोल कहणा।

२५ पचीसमें बोलें शुभ जोग अशुभ जोग किस्यो भाव किसी आत्मा ?

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम वरजी ने, आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय - उदय परिणामी, आत्मा जोग। छव में नव में का बोल कहणा।

२६ छवीसमें बोलें व्रत अव्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय वरजी ने, आत्मा, चारित। अव्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा अनेरी।

२७ सत्तावीसमें बोलें पञ्च महाव्रत पञ्च सुमति तीन गुप्त किस्यो भाव किसी आत्मा ?

पञ्च महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय वरजी, आत्मा चारित।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक क्षयोपशम, परिणामिक, आत्मा जोग।

३३ तेतीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उप-
शम क्षायक क्षयोपशम निपन्न छव में कोण नव
में कोण ?

उदय निपन्न छवमें जीव नवमें जीव आस्रव।
उपशम निपन्न छवमें जीव नवमें जीव संवर।
सतरा (१७) को तो क्षायक निपन्न छवमें जीव
नवमें जीव संवर, एक मिथ्या दर्शन शल्य को
छव में जीव नवमें जीव संवर निर्जरा, क्षयोप-
शम निपन्न छव में जीव नव में जीव संवर
निर्जरा।

३४ चौतस में बोलै बारह व्रत को द्रव्य खेत काल
भाव राखै तेहनो विगत।

पहिला व्रत से आठमा व्रत तांई तो द्रव्य थकी
आघार राखै ते द्रव्य उपरान्त त्याग, खेत्र थी
सर्व खेत्रा में, काल थकी जाव जीव, भाव थकी,
राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर
निर्जरा। नव में व्रत द्रव्य खेत ऊपर परिमाणे
काल थकी एक महुरत भाव थी राग द्वेष रहित,
उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा। दशमूं
व्रत द्रव्य खेत भाव गुण तो ऊपर परिमाणे, काल
थकी राखै जितनो काल इग्यारमीं व्रत को

दर्शन मोहनीय को चायक निपन्न चौथा से चौदमें गुणठाणे तथा सिद्धां में ।

चारित्र मोहनीय को चायक निपन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणे ।

दर्शन मोहनीय को चयोपशम निपन्न पहिला से सातमां गुणठाणे तांई ।

चारित्र मोहनीय को चयोपशम निपन्न पहिला से दशमां गुणठाणां तांई ।

३७ सेंतीस में बोलें आठ आत्मा में मूल गुण कितनी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा । बाकी दोनूं नहीं ।

३८ अड़तीसमें बोले आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा—चात्मा तो आप आपरी, द्रव्य आत्मा तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम वरजी ने, उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन चायक चयोपशम परिणामिक, दर्शन आत्मा भाव पांचोंही ।

चारित्र आत्मा भाव च्यार उदय वरजी ।

एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक ते संवर भाव ४ (च्यार) उदय वरजी ने, आत्मा दर्शन। अप्रमादी संवर भाव च्यार उदय-वरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ (तेरा) संवर का बोल भाव ४ (च्यार) उदय वरजीने आत्मा चारित्र।

४२ बयालीस में बोलो पन्दरह जोग किसे भाव किसी आत्मा. जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत।

भाव की विगत।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन जोग, व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम वर्जी नें।

औदारिक को मिश्र, कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय क्षायक परिणामिक।

असत्य मन जोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा, मिश्र भाषा वैक्रिय को मिश्र, आहारिक नूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक वैक्रै ए दोय जोग भाव ३। उदय क्षयो-पशम परिणामी।

जीह्वा, स्पर्श। भाव घो पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं छवमें कोण नव में कोण? भाव इन्द्री छव में जीव नव में जीव निर्जरा, ते किणन्याय दर्शनावरणी कर्म चय उपशम थयां घो जीव इन्द्रिय पणो पाम्यो इणन्याय।

४ चमालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा?

गति परिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी। कषाय परिणामी भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा कषाय। वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय तथा अनेरी। योग परिणामी लेश परिणामी भाव च्यार उपशम वरजी ने आत्मा योग। इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग। ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी। दर्शन परिणामी भाव पांचों ही, आत्मा दर्शन। चारित्र परिणामी भाव च्यार उदय वरजी ने आत्मा, चारित्र।

४५ पैंतालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० (दश) बोल छव में कोण नव में कोण?

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ बेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यञ्च ८ यां में तो ३ माठी लेश्या पावे।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ वनस्पतिकाय १ भवन पतिकाय १० वानव्यन्तर १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल वरजी ने। जोतषी अने पहिला दूजा देवलोक का देवतामें लेश्या पावे १ तेजू। तीजा से पांचमां तांई पद्म। छट्ठा देवलोक से सवार्थ सिद्ध तांई पावे १ शुक्ल। सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावे छव। सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली।

४८ षड़चालीसमें बोले अजीव ना चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना? ऊंचा लोक अने अढ़ी द्वीप बारे १० पावे। धर्मास्ति अध-र्मास्ति आकाशास्ति को खन्ध अने काल ए च्यार टल्या।

नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) [illegible] काल छोड़ वध्यो। ऊंची दिशि में ११ (इग्यारे पावे नीची दिशि में १० पावे।

४९ गुणस्थानके बोले ([illegible])

[illegible] मणि. ६ इन [illegible] १४,

चोवीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५
५६ स्थावर ५७ पर्याप्तो ५८ अपर्याप्तो ५९ ५
सठ बोल किसो भाव किसो आत्मा ?
परिणामी, आत्मा अनेरी, छव में
कोण ? छवमें जीव नवमें जीव । तथा
निर्जरा दोनूं नहीं ।

५० पचासमें बोले २२ (बाईस)
कर्म के उदय तथा छव में नवमें कोण ?
११ इग्यारे परीषह तो वेदनी कर्मना
२ दोय ज्ञानावरणी कर्म ना उदय स
८ आठ मोहनीय कर्म नां उदय से ।
१ अन्तराय कर्म का उदय से ।
छव में जीव नव में जीव निर्जरा ।

५१ इक्यावनमें बोले तेवीस पदवी किसो
आत्मा ?
१८ उगणीस पदवी तो भाव २ (
क्षायिक, आत्मा अनेरी ।
१ तिर्थंकरी महाराज को पदवी भाव
परिणामिक आत्मा उपयोग ।
१ साधूजी महाराज को पदवी भाव ४ (
उदय वरजी आत्मा चारित्र ।

१ श्रावक की पद्वी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश, चारित ।

१ समदृष्टि की पद्वी भाव ४ (च्यार) उदय वरजी आत्मा, दर्शन ।

उपरौक्त पद्वी तो छव में जीव नव में जीव समदृष्टि की अने केवली की पद्वी छव में जीव नव में जीव निर्जरा । साधु श्रावक की पद्वी छव में जीव नव में जीव संवर ।

२ बावनमें बोले नव तत्व का ११५ (एकसह पंदरह) बोल की

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी विगत जीव का १४ श्रास्रव का २० संवर का २० निर्जरा का १२ मोक्ष का ४ एवं ७० ।

अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४ पुन्य का ९ (नव) पाप का १८ (अठारा) बंध का ४ (च्यार) एवं ४५ ।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ?

निर्वद्य तो ३६ तिणमें निर्जरा का १२ संवर का २० मोक्ष का ४ ए छवतीस ।

सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन वचन काया जोग ए च्यार टल्या) ।

॥ किसे भाव ॥

अजीव का तो भाव एक परिणामिक १४ जीव २० आस्रव का ए चौतीस बोल भाव दोय य परिणामिक ।

र का २० (बीस) बोलां में से १५ पन्दरह तो व च्यार उदय वरजी ने, अने अकषाय संवर व ३ (तीन) उपशम चायक परिणामिक, जोग मन वचन काया ए च्यार भाव एक परि-ामिक ।

र्जरा का १२ बोल भाव ३ तीन चायक चयोपशम रिणामिक ।

मोच का यामें से ज्ञान तप ए दोय तो भाव तीन चायक चयोपशम परिणामी, अने दर्शन चारित्र दोय भाव च्यार उदय वरजी ने ।

॥ इति सम्पूर्ण ॥

॥ जाणपणा का पच्चीस बोल ॥

१ देव अरिहन्त, गुरु निग्रन्थ, धर्म केवली परूप्यो ये तीन अमूल्य रत्न है ।

अथवा साधू मुनिराज नें निर्दोष आहार पाणी वहि-राविं तथा मन वचन काया का शुभ जोग वरतावे जेह निर्वद्य करणी जिन आज्ञा नें छे तेह थी पाप क्षय होय पुन्य बंधे, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे १० में ज्ञान विना क्रिया करे तेह नें देश आराधक कह्यो छे, मेघ कुमार हाथी रा भव में सुसला ज्यान-वर नी दयाकरी आपणो पग ऊंचो राख्यो घणो कष्ट सह्यो तिणनूं प्रति संसार करी मनुष्य नो आऊखो बांध्यो, उत्तराध्ययन ७ सातमें मिथ्यातीने निर्जरा धार्मी सुव्रती कह्यो छे, भगवती शतक ९ में उद्देशे ३१ में असोच्चा केवली अधिकारे प्रथम गुणठाणाराधणीरा शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छे।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष आहार भो-गवे अने ठंडो वासी आहार पाणी में बेन्द्री आदि जीव हुवे तो नहीं भोगवे परन्तु बेइन्द्रियादि तथा फूलणादि नहीं होवे तो ठंडो वासी आहार भोगवतां दोष नहीं उत्तराध्ययन ८ में गाथा १२ मी में शीतल पिण्ड आहार लेणो कह्यो तथा आचारंग सुत्र खंध १ अध्येन ९ में उद्देशे ४ चौथे गाथा १३ में भगवान ठंडो आहार भोल्यो लियो कह्यो छे तिशं टीकामें वासी भात कह्यो तथा प्रश्न व्याकरण

॥ अथ लघुदण्डक लिख्यते ॥

पहलो शरीर द्वार ।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारिक ३ तैजस ४ कार्मण ५ ।

सातों ही नारकी और सर्व देवताओं में शरीर पावै तीन—वैक्रिय १ तैजस २ कार्मण ३ ।

च्यार थावर, तीन विकलेन्द्री में, तथा असन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य, सर्वयुगलियां में शरीर पावै ३—औदारिक १ तैजस २ कार्मण ।

वाउकाय, सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री मनुष्यांमें शरीर पावै ४—औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४ ।

गर्भज मनुष्यो में शरीर पावै पांचूंही ॥

सिद्धां में शरीर पावै नहीं ॥

॥ इति प्रथम शरीर द्वारम् ॥

॥ दूजो अवगाहना द्वार ॥

जघन्य अवगाहनां आंगुल को असंख्यातकं भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन झाझेरी ।

उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातकं भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन झाझेरी ।

सातवां तथा आठमां देवलोक का देवतां की अवगाहनां ४ च्यार हाथ की। नवमां, दशमां, इग्यारवां, तथा बारवां की ३ तीन हाथ की अवगाहनां होय। ९ नव ग्रैवेयक का देवां की दोय हाथ की।

पांच अनुत्तर विमान का देवां की अवगाहनां १ एक हाथ की।

देवता उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातमं भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की अवगाहनां जाणो।

बारवां देवलोक कि ऊपर का देव वैक्रिय करै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्य की जघन्य, उत्कृष्टी आंगुल को असंख्यातवां भाग।

वनस्पतिकाय की अव० जघन्य तो आंगुल को असंख्यातमं भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी कमल फूल की अपेक्षा।

बेइन्द्री की अव० १२ जोजन की, उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगाहनां ३ कोस की, उत्कृष्टी।

चौरिन्द्री की अवगा० ४ कोस की, उत्कृष्टी।

अनें जघन्य आंगुल को असंख्यातवें भाग। तिर्यञ्च पंचेन्द्री का ५ भेद—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

१ कोस की, ५ हरिवास ५ रम्यक वासका की २ स की, ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुका की ३ कोस की, अन्तर द्वीपका की ८०० धनुष की ५ महा विदेह का मनुष्यां की ५०० धनुष की।

सिद्धां की जघन्य १ हाथ ८ आंगुल की उत्कृष्टी ३ धनुष, १ हाथ ८ आंगुल की।

॥ इति अवगाहना द्वारम् ॥

॥ तीसरो संघयण द्वार ॥

संघयन ६ तेहना नाम वज्र ऋषभनाराच १, भनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, कीलको छेवटो ६ एवं।

नारकी देवता में संघयण पावै नहीं।

थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी र्यञ्च में संघयण १ छेवटो गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च में यण पावै ६ छहुं ही, सर्व युगलिया त्रेसठशला पुरुषों में संघयण वज्र ऋषभ नाराच पावै।

सिद्धां में संघयण पावै नहीं।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

॥ चौथो संठाण द्वार ॥

संस्थान ६—तेहना नाम—समचौरंस १, निगव-

ज्ञा ४ । २४ दंडकां में संज्ञा ४ पावे, मनुष्य ष्पसंज्ञो
हुता पण होय सिद्धा में संज्ञा नहीं ।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

॥ सातमू लेश्या द्वार ॥

त नारकी में पावे ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी)
हनी विगत ।

पहली दूसरी में पावे १ कापोत ।

· तीजी में कापोत वाला घणा, नीलवाला थोड़ा

चौथी में पावे १ नील ।

पांचमी में नील वाला घणा, कृष्ण वाला थोड़ा

छट्ठी में पावे एक कृष्ण ।

सातमी में पावे १ महाकृष्ण ।

वनपति वानव्यन्तर, देवतां में लेश्या पावे ४ पहल
क टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी ष्पप्प वनस्पतिकाय में तथा सर्व युगलियां
लेश्या पावे ४ प्रथम ।

तेउ वाउकाय, ३ विकलेन्द्री, ष्पसन्नी मनुष्य,
र्वेन्द्र में लेश्या पावे ३ माठी ।

जोतिषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला
ल्विषी में लेश्या पावे १ तेज ।

सात नारकी वाउकाय में चार पहेली समुद्घात पावे, भुवनपति वानव्यन्तर जोतषी वारवां देवलोक तांई का देवता गर्भेज तिर्यञ्च में समुद्घात ५ आहारिक केवल टली ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च सर्व युगलिया वारवां से ऊपर का देवता में समुद्घात ३ पावे पहली। गर्भेज मनुष्यां में समुद्घात ७ सातों ही पावे। केवल्यां में १ केवल समुद्घात पावे। तीर्थंकर समुद्घात करे नहीं, सिद्धां के समुद्घात नहीं।

॥ इति समुद्घात द्वारम् ॥

॥ दशमूं सन्नी असन्नी द्वार ॥

सन्नी के मन असन्नी के मन होय नहीं। ७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यञ्च युगलिया सन्नी होय। ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, छमुर्छिम मनुष्य, छमुर्छिम तिर्यञ्च ये असन्नी होय। मनुष्य नो सन्नी नो असन्नी पण होय, सिद्ध सन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

॥ इग्यारमूं वेद द्वार ॥

३—वेद, स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३। ७ नारकी,

॥ तेरमूं दृष्टि द्वार ॥

दृष्टि ३ सम्यक् १ मिथ्यात २ सममिथ्या दृष्टि ३ एवं ३ होय।

७ नारकी, १२ बारमां देवलोक तांई देवता, गर्भेज मनुष्य गर्भेज तिर्यञ्च में दृष्टि तीनूं ही होय। ५ थावर में, असन्नी मनुष्य में, ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में दृष्टि १ मिथ्यात्व दृष्टि पावे। ६ ग्रैवेकका देवतां में, ३ विकलेन्द्री में, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में दृष्टि २ सम्यक् १, मिथ्या २ पावे ५ अनुत्तर विमान का देवता सिद्धां में दृष्टि १ सम्यक् पावे।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

॥ चौदमूं दर्शन द्वार ॥

दर्शन ४—चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३ और केवल दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवा।

७ नारकी, सर्व देवता में गर्भेज तिर्यञ्च में दर्शन चक्षु १, अचक्षु १, अवधि ३। गर्भेज मनुष्यां में दर्शन ४ होय, ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री में, दर्शन १ अचक्षु पावे। असुर्छिम तिर्यंच, मनुष्य, सर्व युगलियां

श्रुत अ० २, अनुत्तर का देवता में तिहां में अज्ञान पावे नहीं ।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

॥ १७ सतरमूं योग द्वार ॥

योग १५—मन का ४, सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३ व्यवहार मन एवं ४ वचन का जोग ४—सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एवं ४ । काया का जोग ७—औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक को मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५ ।

७ नारकी सर्व देवता में जोग पावे ११ मन का ४, वचन का ४, वैक्रिय ९, वैक्रिय को मिश्र १० कार्मण ११, सर्वयुगलियां में योग पावे ११ मनका ४, वचन का ४, औदारिक ९, औदारिक को मिश्र १० कार्मण ११ वाउकाय वरजीने, ४ स्थावर, असन्नी मनुष्य में योग पावे ३ औदारिक औदारिक को मिश्र कार्मण । तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री, में पावे ४ औदारिक १, औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४ । वाउकाय में योग पावे ५—औदारिक १, औदारिक मिश्र २, वैक्रे ३ वैक्रे मिश्र

गर्भेज मनुष्यां में उपयोग पावे १२ सिद्धां में उपयोग पावे २ केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १ ।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

॥ १९ उगणीसमूं आहार द्वार ॥

उन्नीस दंडक का जीव तो छहुं ही दिशा को आहार लेवे ।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशि को आहार लेवे ।

केवली मनुष्य अणआहारी पण होय, सिद्ध भगवन्त आहार लेवे नहीं ।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

॥ वीसमूं उत्पत्ति द्वार ॥

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता, तेउ, वाउ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यंच का दुर्गतियां में उत्पत्ति पावे गति २ की, मनुष्य तिर्यंच ।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में उत्पत्ति पावे १ मनुष्य गति की ।

पृथ्वी अप वनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावे ३ गति की (नारकी टली)

हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ३॥ पल्योपमकी।

दक्षिण दिशि का ८ नो निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ॥। पौण पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका असुर कुमारांकी जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ४॥ साडा च्यार पल्योपम की।

उत्तर दिशि का ८ निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणीं दोय पल्योपम की, देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणों १ पल्योपम की।

व्यन्तर देवतां की स्थिति।

जघन्य १० हजार वर्ष की उ० १ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उ० ॥ आधा पल्योपम की, तिर्भूनका देवां की भी इतनी ही।

ज्योतषी देवां की स्थिति।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य झाझेरी उ० २ सागर झाझेरो, यांकी देव्यां की जघन्य १ पल्य झाझेरी, उ० परिग्रही की ९ पल्य की, अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की ।

३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर उ० ७ सागर की

४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर झाझेरी उ० ७ सागर झाझेरी ।

५ पांचवां की ज० ७ सागर उ० १० सागर की ।

६ छट्ठा देवलोक का देवतां की ज० १० सागर उ० १४ सागर की ।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की ।

८ आठवां की ज० १७ उ० १८ सागर की ।

९ नववां की ज० १८ उ० १९ सागर की ।

१० दसवां की ज० १९ उ० २० सागर की ।

११ इग्यारवां की ज० २० उ० २१ सागर की ।

१२ बारवां की ज० २१ उ० २२ सागर की ।

१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३ ।

१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४ ।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की जघन्य २४ उ० २५ ।

१६ चौथा ग्रैवेयक की जघन्य २५ उ० २६ ।

१७ पांचवां ग्रैवेयक की जघन्य २६ उ० २७ ।

की १ कोड़ पूर्वकी, थलचर सन्नीकी ३ पल्योपम
सन्नी की ८४ हजार वर्ष की, उरपुर सन्नी की
पूर्व की, असन्नी की ५३ हजार वर्षकी, भुजपर
की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ४२ हजार वर्ष की,
सन्नी की पल्योपम के असंख्यातमूं भाग, असन्नी
२ हजार वर्ष की। असन्नी मनुष्य की ज० उ०
मुहूर्त की।

मनुष्य की स्थिति, ज० अन्तर मुहूर्त की उ०
५ भर्त एरभर्त का मनुष्यां की अवसर्पिणी के
पहिलो आरो लागतां ३ पल्य की, उतरतां २
पल्य की, दूसरो लागतां २ पल्य की, उतरतां १
पल्य की, तीसरो लागतां १ पल्य की, उतरतां
कोड़ पूर्व की चौथो आरो लागतां कोड़ पूर्व की,
उतरतां १२५ वर्ष की पांचमूं लागतां १२५
वर्ष की उतरतां २० वर्ष की, छट्ठो लागतां २०
वर्ष की। उतरतां १६ वर्ष की। उत्सर्पणी
काल में इमहिज चढ़तो कहणी, पांच महाविदेह
खेत्रां की १ कोड़ पूर्व की उत्कृष्टी स्थिति।

मिथियां की स्थिति:—

५ हिमवय, ५ परणवयवां की ज० देश उणो १
पल्य उ० १ पल्य की।

चवन १ मनुष्य को। सातमी नारकी में तथा तेउ [illegible] में चवन १ तिर्यञ्च गति को ही।

[illegible] गर्भेज मनुष्य तिर्यञ्च, असन्नी तिर्यञ्च, पंचेन्द्री में चवन च्यारूं ही गति को, जुगलिया में चवन १ देव [illegible] को सिद्धां में चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

॥ २९ मूं गतागति द्वार ॥

[illegible] से छट्ठी नारकी तांई गति २ दण्डक, [illegible] २ दण्डकां की मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री।

सातमी नारकी में आगति २ दण्डकां की, गति [illegible] पंचेन्द्री की, गत आवई।

[illegible], वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहिला दूजा देव [illegible] (समकिती) देवतां की, आगत २ [illegible] (मनुष्य तिर्यञ्च की) गति ५ दण्डकां की [illegible] मनुष्य पृथ्वी पाणी वनस्पति की।

[illegible] देवलोक से आठमा देवलोक तांई गता [illegible] २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च) नवमां देवलोक [illegible] [illegible] १ मनुष्य की।

[illegible] पाणी वनस्पति [illegible] आगत [illegible] दण्डकां [illegible] गति १०—दण्डकां की ५

ोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा. द्रव्य थकी एहिज
द्रव्य खेत थकी सर्व खेतां में. काल थकी जाव जीव लगे,
ाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित. गुण थकी
ंवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रत विषे अतिचार
दोष लागा होय ते आलोऊं ।

किणी प्रति कूड़ो आल दियो होय १
ानो वात प्रगट करी होय २
ना मरम प्रकाश कीधा होय ३
देश दीधो होय ४
लिख्यो तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं

थूलाउ दाणाउ विरमणं
लेवो मैं को निवर्तवो
रो द्रव्य ं खणी
ओ ी बाट ी वस्तु
ं इत्यादि ी चोरी
ाऊं ा वायसा
सर्व खेतांमें,
ा द्वेष रहित,
ा एहवा म्हारे
ाय ते आलोऊं ।

त्रस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिन्द्री पंचेन्द्री बिन अपराधे आकुटी हणवानो विधि करी नै स उपयोग हणूं नहीं हणावूं नहीं मनसा वायसा कायसा। द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां मांहि काल थकी जाव जीवलग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे पहला व्रत नै विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

त्रस जीवनें गाढ़े बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहाकीनां होय ५। तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

बीए अणुव्वय थुलाउ मुसावायाउ विरमणं
बीजो अणुव्रत स्थूलथी झूठ बोलवा निवर्तवो

पांचे बोलि करी ओलखीजे. द्रव्य थकी कंनालिक १
कन्याके वास्ते झूठ

गोवालिक २ भौमालिक ३ थापण मोसो ४
गाय भैंसादि भूमि निमित्त लेकर नटयो नै
कारण झूठ झूठ अमानत में खयानत

कूड़ोसाख ५।
झूठी साखी

...दि मोटको झूठ मर्यादा उपरांत बोलूं नहीं

बोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेतां में, काल थकी जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रत विषे अतिचार दोष लागा होय ते आलोऊं ।

किणी प्रते कूड़ो आल दियो होय १
रहस्य छानो वात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषना मरम प्रकाश कीधा होय ३
मृषा उपदेश दीधो होय ४
कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं

॥ इति ॥

तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं तीजो अनुव्रत स्थूलथकी अणदियो लेवो ते चोरीको निवर्तवो पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी खेत खणी गांठ खोली तालो पड़कूञ्चीकरी बाट पाड़ी पड़ी वस्तु मोटकी सधणियांम्ति जाणी इत्यादि मोटकी चोरी मर्यादा उपरान्त करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रांमें, काल थकी जाव जीव लगे भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे तीजा व्रतमें ज्यों कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं ।

कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोड्या होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषासे सेया होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

पंचमे अणुव्वए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पांचमूं अणुव्रत स्थूलथकी परिग्रहते धनको निवर्त्तवो

पांचा बोला करी ओलखीजे द्रव्यथकी खेत्तु
उघाड़ी जमीन

वत्थु यथा प्रमाण, धन धान यथा प्रमाण
ढकी जमी जेह प्रमाण कीधा, द्रव्य नाज जेह प्रमाण कीधो

कुवी धातु यथा प्रमाण, हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
तांबो पीतल लोहादिनो चांदी सोनाको जे प्रमाण कीधो
जेह प्रमाण कीधो,

द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण ।
दासदासी हाथी घोड़ादिक चौपद जे प्रमाण कीधो।

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रा में, काल थकी जावज्जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा एहवा म्हारा पांचवां अणुव्रत में ज्यो अतिचार लागा होय ते आलोऊं; खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय १, हिरण्य सुवर्ण रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय

२, धन धान्य रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३ द्विपद चउपद रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ४, कुम्भी धातु रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी तो ऊंची दिशा रो यथा प्रमाण, नीची दिशा रो यथा प्रमाण तिरछी दिशा रो यथा प्रमाण, यां दिशा रो प्रमाण कीधो तिह उपरान्त जाय कर पंच आस्रव हार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनमा वायमा कायसा द्रव्य थकी तो षडिज द्रव्य खेत्र थी सर्व खेत्रा में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा मांहरे छट्ठा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोऊं

ऊंची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४
पंथ में संदेह सहित अधिक चाल्यो चलायो होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलां खोलखिजै. द्रव्य थकी छव्वीस बोलां की मर्यादा ते करें है

उल्लणिया विहं १ अंग पूछणादि विधि	दंतण विहं २ दांतण विधि	फल विहं ३ फल विधि
अभिंगण विहं ४ तैलमर्दनादि विधि ते तेल मालिश	उवट्टण विहं ५ उवटणादि की विधि	मंजन विहं ६ स्नान की विधि
वत्थ विहं ७ वस्त्र विधि	विलेवण विहं ८ विलेपन विधि	पुप्फ विहं ९ पुष्प विधि
आभरण विहं १० आभूषण गहणां विधि	धूप विहं ११ धूप की विधि	पेज विहं १२ दूध आदि पीवा की विधि
भक्खण विहं १३ सूंखड़ी आदि भक्षण की विधि	उदन विहं १४ चावल की विधि	सूप विहं १५ दाल की विधि
विगय विहं १६ विगय की विधि	साग विहं १७ साग की विधि	महुर विहं १८ मधुर सरस मेवादिक फल
जीमन विहं १९ जीमन की विधि	पाणी विहं २० पाणी की विधि	मुखवास विहं २१ मुखवास पानादि की विधि
वाहन विहं २२ गाड़ी मनुष्य की बैठण विधि	सयण विहं २३ सोवा की विधि खाट ढोल्यां बिछोनादि पर	पन्नी विहं २४ पगरखां की विधि

सचित विह २५ द्रव्य विह २६
सचित की विधि द्रव्य की विधि

ए छावीस बोलां की मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगवा नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी, एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा सांइरा सातमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोऊं ॥ पच्चखाणां उपरान्त सचित रो आहार कीनो होय ॥ १ ॥ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्य रो आहार कीनो होय ॥ २ ॥ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिक पहन्या होय ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिक पहन्या होय ॥ ४ ॥ पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिक भोग्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ पन्दरह करमां दान जाणवा जोग छे पण आदरवा जोग नहीं ते कहे छे ।

इंगालकम्मे १	वण कम्मे २	साड़ी कम्मे ३
अग्निकारी लुहार्‌-रादि कर्म	बन कर्म ते वनमें घास दरखतादि काटवो	सकट कर्म ते गाड़ी प्रमुखनो कर्म

…ड़ी कम्मे ४ फोड़ी कम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६
…ते किराया …रादि कर्म दांतको विनज
…ता कर्म ते नारेल सुपारी ते व्योपार
पत्थर आदि फोड़वां
…लक्खवाणिज्जे ७ रस वाणिज्जे ८ केस वाणिज्जे ९
…लाखको वाणिज्य रस व्यापार ते बाल चमरादि
घी, तेल सहतादि व्योपार
विषवाणिज्जे १० जन्तु पिलणया कम्मे ११
जहरको व्यापार कल घाणी प्रमुख कर्म
निलञ्छणिया कम्मे १२ दवग्गिदावणिया कम्मे १३
…बधियादि कर्मे दावानलदेवो कर्म ते
… करतेनें घायां कर्म वन प्रमुखनें लायलगावचो
सर. दह तालाव सोसणियां कम्मे १४ असईजण
सरोवर द्रह तलाव आदिने सोषावो ते कर्म असती ते असंजती जननें
पोसणिया कम्मे १५ ॥ ॥ इति ॥
पोषवा नों कर्म

ए पन्दरह कर्मादान आगार उपरान्त सेया सेवाया ॥ इति ॥
होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥
आठमूं अनर्थ दण्ड विरमण व्रत पांचा बोलां
बोलखिजे, द्रव्य थकी अवज्झाणचरियं १
भूंडा ध्यानको आचरवो
पमायचरियं २ हिंसपयाणं ३ पाव कम्मोवएसं
प्रमाद करवो प्राण हिंस्या पाप कर्म को उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दण्ड आठ प्रकार का आगार
उपरान्त सेऊ नहीं ते कहे छै।

आएहिउया १ नाएहिउया २ आगारिहिउया ३
आपणें हित न्यातीलाके हित घरके हित
परिवारे हिउया ४ मित्तहिउया ५ नागहिउया ६
परिवारके हित मित्रके हित नाग देवता निमित्त
भूत हिउया ७ जक्ख हिउया ८
भूत देवता जक्ष देवता
निमित्त निमित्त

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्रां में
काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष
रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा
म्हारा आठमां व्रत के विषे जो कोई अतिचार दोष
लागो हुवे ते आलोऊं।

कन्दर्पनी कथा कीधी होय १ २ भंड कुचेष्टा कीधी होय
काम विकारकी कथा को करणों भांडनीपरे कुचेष्टा करि हो
मुखरि अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण
मुखरी बोलता वचन बोलता होय नाना भांड
जोड़ा मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
मुकाया नाना भांतका अस्तर एक बार भोग बार बार भोग
भो विगड़ किसो में आवे में आवे

अधिक भोग्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं
मर्यादा उपरान्त अधिक तो मिच्छामि दुक्कड़ं
भोग्या होय ते

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलां थोलखिजे
करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
करूं छूं मैं हे भगवन्त सामायक सावद्य जोग पचखाण
जाव नियम (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहं
यावत् नियम एक मुहुर्त्त ते सेऊं छूं दोय करणसे
दोय घड़ी
तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोगसे, सावद्य नहीं करूं नहीं कराऊं मनसें वचनसें
कायसा तस्स भंते पड़िक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसें तिण सूं हे पडिकमूं छूं निन्दूं छूं गर्हणा ते
भगवान निषेधूं छूं
अप्पाणं वोसिरामि ॥
पर से आत्मांने वोसराऊं छूं

द्रव्य थकी करने राख्या ते द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी एक मुहूर्त तांई, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, ऐहवा नवमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ।

मन वचन कायका माठा जोग प्रवर्ताया होय १ मांड़वा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक में समता नहीं करी हुवे ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

॥ इति ॥

दशमो देशावगासी व्रत पांचां बोलां ओलखिजे, द्रव्य थकी दिन प्रते प्रभात थी प्रारंभीने पूर्वादि छव दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भूमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादिक री मर्यादा करी तिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी जेतलो काल राख्यो, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दशमा व्रत थी विषे जे कोई अतिचार दोष लागो दे आलोऊं ।

नवीं भूमिका बारली वस्तु मगाई होय १ मुक-लाई होवे २ शब्द करी आपो जणायो होय ३ रूप करी आपो जणायो होय ४ पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं । इति

इग्यारमूं पोषध व्रत पांचां बोलां करि श्रोलखिजे द्रव्य थकी।

असण पाण खादिम खादिम ना पचक्खाण
आहार पाणी मेवादिक पानसुपारीदिकको पचखाण
अबम्भना पच्चखाण उमकमणी सुवन्नना पच्चखाण
मैथुन सेवाका त्याग सोनरायां गुंथा रत्नसोनाका त्याग
माला वणग विलेवन ना पच्चखाण
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चन्दनादि नो विलेपनका त्याग
सत्थमुसलादि सावज्झ जोगरा पच्चखाण
शस्त्र मुसलादि सावद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पच्चखाण, करी ने द्रव्य राख्या जिण उपरान्ति पंच आस्रव हार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य, खेतथी सर्व लोकां में, काल थकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे इग्यारमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं।

सेज्जा संथारो अपडिलेह्यो होय दुप्पडिलेह्या
सेजा जगां विस्तर पडिलेह्या नहीं होय आछीतरें नहीं
होय १ अप्रमाज्यों होय दुप्रमाज्यों होय २
पडलेहना नहीं प्रमज्यां करी आछीतरे नहीं प्रमाज्यां
उच्चारपासवण भूमिका अपडिलेही होय दुपडि
छोटी बड़ी नीतकी जमीन पडिलेही न होय अथवा

लेशो होय ३ अप्रमांज्यो होय दुप्रमार्ज्यो होय ४
आछी तरे नहीं पूंज्या नहीं तथा रीत प्रमाणे नहीं पूंज्या होय
पडिलेही होय
पोषह में निन्दा विकथा कषाय प्रमाद करी होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलां
पोलखिजे द्रव्य थकी ।

समणे निग्गंथे फासू एसणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रंथ न प्रासूक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ सादिमं वत्थ ५ पडग्गह ६
पाणी मेवो लोंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो
कंबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारो ९ पीढ़
कांबलो पग पूंछणो जाचीने पाछा पाट
मोलावे ते अमानत

फलग १० सिज्जा ११ संथारो १२ ओषद १३
बाजोटादि जमीन जगां तृणादिक दवाई
भेषद १४ पडिलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभतो थको विचरूं

इत्यादिक चौदह प्रकारनूं दान शुद्ध साधुनें देऊं
देवाऊं देवता प्रते भलो जाणूं मनसा वायसा कायसा,

द्रव्य थकी एहिज कल्पतो द्रव्य, क्षेत्र थकी कल्पे तिण खेत्रां में, काल थकी कल्पे तिण काल में भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं सूजती वस्तु सचित्त पर मेली होय १ सचित्त थी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय ४ भावें बैठ साधु साध्वियांकी भावना नहीं भाई होय तेहनूं मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

॥ अथ संलेखणा की पाटी ॥

इह लोगा संसप्पउगे १ परलोगासंसप्पउगे २
यह लोकका जशकी तथा द्रव्यादि की इच्छा — परलोक में सुखकी वांछा

जीविया संसप्पउगे ३ मरणा संसप्पउगे ४
जीवित की इच्छा — मरण की

काम भोगा संसप्पउगे ५ मा मुज्झं मरणान्ते।
काम भोग की इच्छा — उपरोक्त ५ विचार मुझको

॥ इति ॥

॥ अथ मंगलीक ॥

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार महलीक अरिहन्त मंगल छे सिद्ध मंगलकारी छे
साह्रू मङ्गलं केवली पणत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधू मंगलं केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगलं
चत्तारिलोग उत्तमा अरिहन्तालोग उत्तमा
ए च्यार लोक में उत्तम जाणवा अरिहन्त लोक में उत्तम
सिद्धा लोग उत्तमा साह्रूलोग उत्तमा केवली
सिद्ध लोक में उत्तम साधू लोक में उत्तम केवली
पणतो धम्मो लोगउत्तमा ॥ चत्तारि सरणं
परूप्यो धर्म ते लोकमें उत्तम ॥ च्यार शरणा
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहण करूं अरिहन्तों का शरणा ग्रहण करता हूं सिद्धांका
सरणं पवज्जामि साह्रू सरणं पवज्जामि केवली
शरण लेता हूं साधूका शरण है केवली
पणत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ च्यारों सरणा
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं
ए सगा अवर न सगो कोय जे भवप्राणी आदरै अचय
अमर पद होय ।

॥ इति ॥

देवसी पायछित विसोधनार्थं करेमि काउसग्गं

॥ इति प्रतिक्रमण ॥

॥ अथ पडिक्कमणा करने की विधि ॥

प्रथम चौबीसत्थो करणो जिण में

इच्छामि पडिक्कमिउं को पाटो १। तस्सोत्तरी को पाटो २। ध्यान में इच्छामि पडिक्कमिउं को पाटो मन में चितारकर एक नवकार गुणनों ३। लोगस्सउज्जो- गरे को पाटो ३। नमोत्थुणं को पाटो ४।

१ प्रथम आवस्सगा सामाइक में।

१ आवस्सगा इच्छामिणं भंते।

२ नवकार एक।

३ करेमि भंते सामाइयं।

४ इच्छामिठामि काउस्सग्गं।

५ तस्सोत्तरी को पाटो।

ध्यान में ९९ निन्नाणवें अतिचार।

आगमे तिविहे पन्नत्ते को पाटो जिस में ज्ञान का चवदह अतिचार।

दंसण श्रीसमकित को पाटो जिसमें समकित का ५ अतिचार।

बारे व्रतां का अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान। इह लोगा संसए पउगे को पाटो। (जिसमें) अतिचार ५ संलेषणां का। यह सर्व ९९ अतिचार अठारह पाप स्थानक कहणा।

इच्छामि ठामि आलोउं जो मे देवसी अइयारोकउ
ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

॥ दूसरा आवसग्ग की आज्ञा ॥

लोगस्स की पाटी ।

॥ इति दूजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ तीजा आवसग्ग की आज्ञा ॥

दोय खमासमणा कहणा

॥ इति तीजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ चौथा आवसग्ग की आज्ञा ॥

समायकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणांकी विगत ।

१ तस्स सव्वस्स की पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलं की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ जो मे देवसी ।

६ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी ।

७ आगमे तिविहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समकित की पाटी ।

॥ अथ पडिक्कमणा करने की विधि ॥

प्रथम चोवीसत्थो करणो जिण में

इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी । तस्सोत्तरी की पाटी २ । ध्यान में इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में चितारकर एक नवकार गुणनों ३ । लोगस्सउज्जो-गरे की पाटी ३ । नमोत्थुणं की पाटी ४ ।

१ प्रथम आवसग्ग सामाइक में ।

१ आवसग्ग इच्छामिणं भन्ते ।

२ नवकार एक ।

३ करेमि भंते सामाइयं ।

४ इच्छामिठामि काउसग्गं ।

५ तस्सोत्तरी की पाटी ।

ध्यान में ९९ निन्नाणवें अतिचार ।

आगमें तिविहे पन्नत्ते की पाटी तिण में ज्ञान का चवदह अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकित का ५ अतिचार ।

बारे व्रतां का अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान । इह लोगा संसइ प्पउगे की पाटी । (तिणमें) अतिचार ५ सलेखणां का । यह सर्व ९९ अतिचार अठारह पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोउं जो मे देवसी अइयारोकउ
ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

॥ दूसरा आवसग्ग की आज्ञा ॥

लोगस्स की पाटी ।

॥ इति दूजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ तीजा आवसग्ग की आज्ञा ॥

दोय खमासमणा कहणा

॥ इति तीजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ चौथा आवसग्ग की आज्ञा ॥

९ आवसगको ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणांकी विगत ।

१ तस्स सव्वस्स की पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलं की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिकमेउ जो मे देवसी ।

६ इच्छामि पडिकमेउ की पाटी ।

७ आगमे तिविहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समत्ते की पाटी ।

ए आठ पाटी कहकर बारह व्रत अतिचार सहित कहणा

पछे संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे देवसी की पाटी कहणी तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स की पाटी, दोय खमासमणा कहणा ।

पांच पदां की वन्दना कहणी ।

सात लाख पृथ्वीकाय सात लाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणा की पाटी ।

॥ इति चौथा आवश्यक समाप्त ॥

॥ पंचमा आवश्यक की आज्ञा लेई कहे ॥

१ देवसी प्रायश्चित विशुद्धनार्थं करेमि काउस्सग्गं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामायिक की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं की पाटी ।

५ तस्सउत्तरी की पाटी ।

ध्यान में लोगस्स कहणो को परमाण लिखे ।

देवसी राई [illegible] ४ लोगस्स का ध्यान

पक्खी में १२ [illegible] लोगस्स को ध्यान ।

चौमासी पक्खी में २० लोगस्स को ध्यान ।

छमछरी ने चालीस लोगस्स को ध्यान।
ध्यान पारी लोगस्स की पाटी प्रगट कहणी।
२ दोय खमासमणा कहणा।

॥ इति पंचमूं आवसग्ग समाप्त ॥

छट्ठा आवसग्ग की आज्ञा लेई कहणा तेहनो विगत।
गयेकालनूं पडिक्कमणो, वर्त्तमान काल में समता, आगामियां कालका पचखाण (यथा शक्ति करणा)।
सामाई १ चौवीस्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पचखाण ६ यां छऊं आवसग्गां में ऊंची नीची ओछो अधिक पाटो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दूक्कडं।

दोय नमोत्थुणं कहणा जिणमें पहिला में तो सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं।
दूजा नमोत्थुणं में सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपवेकामो नमो जिणाणं।

॥ इति ॥

॥ तेरापन्थ ओलखणा की ढाल ॥

आप इयें नहीं प्राण कूं, नहीं कहिने हणावे हो।
हणतानें भलो न चिन्तवे, ऐसी दया पलावे हो॥
लोकी तेरापंथ पावे हो॥ १॥ के तो मूंन पर्हो रहे, के निर्वद्य गावे हो। सावद्य काम संसारका, ते तो

चित्त में न चाहवे हो ॥ सो ॥ २ ॥ जाच्यो बिन एक तिणखलो, करसूं नांहि उठावे हो। भोग तज्यां मामय तणा, मांठी नजर न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ३ ॥ रत्न धर्नें कयड़ी भणी, नहीं राखे रखावे हो। जे जे छपयद्द जिण कह्या, तिणसूं अधिक न ल्यावे हो ॥ सो ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत पालता, नव विध शील मनावे हो। सुमति गुप्त बारह भेद सूं, पूरण कर खपावे हो ॥ सो ॥ ५ ॥ संयम सतरह भेद सूं, रूड़ी रीत निभावे हो। परीषह पायां संग्राम में, शूर जिम रहामा ध्यावे हो ॥ सो ॥ ६ ॥ अनाचार बावन तजे, गुण सत्तावीस पावे हो। दोष बया लिस टाल थी, असणादिक ल्यावे हो ॥ सो ॥ ७ ॥ काल अनागत कार्य, तिण दिशि नहीं ध्यावे हो। ताक २ तेरापन्थी, ताजा घर नहीं जावे हो ॥ सो ॥ ८ ॥ निन्दत छेदत जो कोई, तिण सूं नांही रिसावे हो। कोई थि टाला टामको, तिणसूं राग न बधावे हो ॥ सो ॥ ८ ॥ कमल काद्य सें दूर रहे, तिम जग में नांहि लिपावे हो। यापो थानक छोड़ने, वामा दूर टोगवे हो ॥ सो ॥ १० ॥ हिंसा धर्म छुड़ायने, दया धर्म दीपावे हो। जिहां ० छे जिनजी चागन्या, तिण में धर्म बतावे हो ॥ सो

॥ ११ ॥ सूतर में जिन भाखियो, तेहवो दान दिरावे हो। दान कुपात्र ने दियां, टेता पाडा ना पावे हो ॥ सो ॥ १२ ॥ परजयो तो जिहां ही रह्या. मुनि बहिरण आवे हो । देखत मुगत फकीर को, तो पाछा फिर पावे हो ॥ सो ॥ १३ ॥ नव तत्व निर्णय नित करे, समकित ने सरधावे हो । मुक्ति नगर मुसक्किल घणो, तिण रो मार्ग बतावे हो ॥ सो ॥ १४ ॥ तेरा वचन विमास ने, सूतर सीख सीखावे हो । तिण बयथा सूं भर्त में, भवियण को चलावे हो ॥ सो ॥१५॥ आपे समकित औषधी, वैद्य भोजन पचावे हो । तेरा-पन्थो वैद ज्यूं, धर्म भोजन रूचावे हो ॥ सो ॥ १६ ॥ मैल खोट प्रते काढ़वा, सोनी सोनो तावे हो । ज्यूं तेरापन्थी परखियां, हृदय न्याय ल्यावे हो ॥ सो ॥१७॥ तेरापन्थ पोलख्यां पाछे, दूजो दाय न पावे हो । अमृत भोजन जीमियां, कूकस कुण खावे हो ॥ सो ॥ १८ ॥ कहे कथादि वारता, सूतर से मिलावे हो । तुम वचनां से नहीं मिले, ताकूं तुरत उडावे हो ॥ सो ॥ १९ ॥ सूत्र न्याय पाखंड भणी, भीखणजी पोल-खावे हो । तेरापन्थ ते धारियो, दया धर्म बतावे हो ॥ सो ॥ २० ॥ भीखणजी तेरापन्थी, तिण में ए गुण पावे हो । प्रभु तेरापन्थरा, शोभो गुण गावे हो ॥ सो ॥२१॥

॥ ढाल ॥

॥ स्वामी श्री भीखणजी कृत ॥
प्राणी कम ठाकुर फुरमाई रे (परदेशी)

देव तणो आचार न जाणे, गुरु की खबर न कांई रे। धर्म तणो तूं मर्म न जाणे, राखे घणो ठसकाई रे ॥ प्राणी समकित किण विध पाई रे ॥ १ ॥ नव तत्त्व रा तूनें भेद न पावे, कूड़ी करे लपराई रे। धर्म तणो धोरी हो बैठो तुमे दीसे घणी भोलाई रे ॥ प्राणी ॥ २ ॥ जीव न जाणे अजीव न जाणे, पुन्य की खबर न कांई रे। पाप तणी प्रकृत नहीं धारी, कीधी घणी लड़ाई रे ॥ प्राणी ॥ ३ ॥ आसव नाला छूटा नहीं देखि, संवर समरा न थाई रे। निर्जरा तणो निर्णय नहीं कीधो थारी कठे गई चतुराई रे ॥ प्राणी ॥ ४ ॥ बन्ध मोक्ष नों भेद न जोडो, तिण री खबर न कांई रे। समदृष्टि रो नाम धरावै, तूनें कुगुरु दिया भरमाई रे ॥ प्राणी ॥ ५ ॥ हाथ जोड़ी ने समकित लेवै, कुगुरां पासे जाई रे। अजाण पणो मिथ्यो नहीं अन्तर, मिथ्या बात बनाई रे ॥ प्राणी ॥ ६ ॥ सांगधारियां ने साधू सरधे, पड़े पगां में जाई रे। तिक्खुत्ता से करे छे वन्दना, मन में हर्षत थाई रे ॥ प्राणी

॥ ७ ॥ मानव हुयो सो पावन [illegible] [illegible] [illegible]
न कांइ रे। निर्वंच हुयो सो सम पुन्य, [illegible] [illegible]
न थाई रे ॥ प्राणी ॥ ८ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
मोता ने रे भरमाई रे। [illegible] [illegible] [illegible]
मांन्हे, मोड़ो है पेट [illegible] रे ॥ प्राणी ॥ ९ ॥ [illegible]
में तं घडेरो वाढै, [illegible] [illegible] न [illegible] रे। [illegible]
कापं हारे छिद बिंधि [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] रे ॥ प्राणी ॥ १० ॥ पुन्य [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] गई लपटाई रे। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] मांहे [illegible] रे ॥ प्राणी ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] भाव न [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] निखेपा रो निरवद न [illegible], [illegible] [illegible] रे ॥
[illegible] रे। प्राणी ॥ १२ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] रो खबर न कांई रे। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] नर्क रो [illegible] रे ॥ प्राणी ॥ १३ ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] नहीं थावै, [illegible] [illegible] [illegible] रे। [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रे ॥ प्राणी ॥ १४ ॥
[illegible] धर्म जिनेश्वर [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] शोध [illegible] निरवद [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] रे ॥ प्राणी ॥ १५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रे। [illegible]

घोलपे घट-भिन्तार, ज्यांमे न सकी देय डिगाई रे ॥ प्राणी ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ श्रावक शोभजी कृत ॥

इण स्वार्थ सिद्ध रे चन्द्रवे (पदेशी)

तेरा नहीं ते सर्व अनेरा, ते संसार में रड़ वडिया जी, तेरा ते तो अमनज तेरा, ते ज्ञान ध्यान गुण भरियाजी । इण भर्त क्षेत्र में चेत चतुर नर, तेरापंथी तिरियाजी ॥ १ ॥ सुमती गुप्त आठूं सुध पाले, पञ्च महाव्रत धरियाजी । ए तेरा पाल्यां तेरापन्थी, ते मुक्ति नगर में रलियाजी ॥ इण भर्त क्षेत्र में ॥ २ ॥ तेरा ते तरिया इम सिवे, ते कर्म कटक से लड़ियाजी । सूधी रीति संयम पाले, ते शिवरमणी ने वरियाजी ॥ इण ॥ ३ ॥ तेरापन्थ में भूल रह्या छै, खोटो करे छै किरियाजी । माथ्यो मोह मेवासी मोटो, त्यांरा कारज सरियाजी ॥ इण ॥ ४ ॥ तेरा मति में तेरापन्थी, संयम भार धरियाजी । त्यांरी करणा चलगत सुणने, पाखण्डी थरहरियाजी ॥ इण ॥ ५ ॥ आज्ञा बारे धर्म प्ररूपे, ते भवसागर पड़ियाजी । ते आज्ञा बारे कारज करी ते मिथ्या मत में अड़ियाजी ॥ इण ॥ ६ ॥ तेरा त्यांरी माथा आवे मत तत्व निर्णय करियाजी ।

पिण फिरतां थकां, जमिया जाला उखेले तायजी, लीलण फूलण मारी जायजी, अनन्ता जीव छै तिण रे मांयजी, वले अवर हणी छः कायजी, तिण री दया न आणी कायजी, तिणरे अल्प आयु बंधायजी ॥ श्री वीर कहै ॥ २ ॥

नींव दिरावे ठेट मूं जी, टांकी बजावे ताय, भेला करि भाठा चूंणे, तिण बोहत हणीं छः कायजी, अनन्ता जीव हणिया जायजी, ते पूरा किम कहि वायजी, साधां ने उतारणरी मन ल्यायजी, तिण मोटो कियो अन्यायजी, तिण रे अल्प आयु बन्धायजी ॥ श्री वीर ॥ ३ ॥

जिण गरथ दियो थानक कारणेजी, ते पिण मराई छःकाय, किण मोल भाड़े ले भोगलावे, किण थाप राखो छै तायजी, इत्यादिक दोपीला कहिवायजी, खोदे खोदे समीकरे जायजी, विधि २ सूं मारी छःकायजी वलि मन मांहि हरषित थायजी, तिण रे अल्प आयुष्य बंधायजी ॥ श्री वीर० ॥ ४ ॥

आहार सिज्या वस्त्र पातराजी, इत्यादिक द्रव्य अनेक, अशुद्ध बहिरावे साधू ने तो डूबा विना विवेकजी त्यां भाग्नी कुगुरांरी टेकजी त्यांरे कर्म आडो कालो रेखजी, त्यांने मोख न लागे एकजी, गुरु ने पिण अट

[illegible] [illegible], [illegible] हुवे तो [illegible] [illegible] [illegible] ।
श्री वीर० ॥ ५ ॥

[illegible] [illegible] हुवे पहले तो पड्यो निगोद [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भव करे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मांहली, [illegible] [illegible] निगोद में [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ श्री वीर० ॥ ६ ॥

[illegible] भव [illegible] करे, एक [illegible] [illegible] [illegible], एक मुहूर्त में भव करे साढा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] श्री वीर० ॥ ७ ॥

[illegible] [illegible] पड्यो [illegible] नरक में तो, पड्यो नरक [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ श्री वीर० ॥ ८ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पाप, तिणसूं जीव उपजे जाय तिर्यंच में, उठे पण घणो रोग सन्तापजी, नहीं छूटे कियां विलापजी, छाडा नहीं पावे गुरु मा बापजी, दुःख भोगवे पापी आपजी, अशुद्ध दान दियां धर्म थापजी, ए मिथ्या कुगुरु तणो प्रतापजी ॥ श्री वीर ॥ ६ ॥

अशुद्ध जाणीनें भोगवे, त्यां भांगी जिनवर पाल, अनन्त उत्कृष्टा भव करे, नर्कमें जामे टांको झालजी, उठे मार देसे नर्कना पालजी कीधा कर्म लेवे संभालजी, रोसी कर्तव्य मांसी निहालजी, भगवती पहिलो शतक संभालजी, बलि नवमो उदेशो संभालजी ॥ ॥ श्री वीर० ॥ १० ॥

आधा कारमी जाणी [illegible] अन्धे [illegible] कम, बलि भए [illegible] आधार[illegible] [illegible] ।
निकल[illegible] त्यांरो [illegible] [illegible]
शर्म[illegible] गोय[illegible]

भोगव लेवे तायजी, त्यांरो पार वेगो नहीं आयजी॥ श्री वीर ॥ १२ ॥

छःकायरे अशुभ उदय हुआ, ते पामें ए करसूं घात, जी साधू पड़िया नर्क निगोद में, सेवकां ने ले लावे साथजी, त्यां मानी कुगुरां री वातजी, कीनी त्रस स्थावरनी घातजी, अनन्ता काल दुःख में जातजी, यानें पण कुगुरां डबोया साख्यातजी ॥ श्री वीर॰ ॥ १३ ॥

गुरांने डबोया श्रावकां श्रावकानें डबोया साध, दोनूं पड़िया नर्क निगोद में, श्री जिनवर धर्म विराधजी, संसार समुद्र अगाधजी, जिन धर्म री रहिस नहीं लाधजी, भव भव में पामें असमाधजी, ए पण कुगुरां तणो प्रसादजी ॥ श्री वीर॰ ॥ १४ ॥

अशुद्ध जणी देवे साधू नें ते साधा नें लूटी लिया ताय, पाप उदय हुवे इण भवे, दुःख दारिद्र धसे घर मांयजी, ऋद्ध सम्पति जावे विलायजी, दुःख मांहि दिन जायजी, कदा पुन्य भारी हुवे तायजी, तो पर भव में शंका नहीं कायजी ॥ श्री वीर॰ ॥ १५ ॥

इम सांभल नर नारियांजी, कीज्यो मन में विचार, शुद्ध साधां ने जाणनेंजी अशुद्ध मत दीज्यो किण-

सारजो, अशुद्ध में धर्म नहीं लिगारजो, सुध दान दे लाहो ल्यो सारजो, ज्यूं उतर जावो भव पारजो, ए मनुष्य जनम नों सारजो ॥ श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥

॥ इति ॥

॥ श्री कालूगणी स्तवन की ढाल ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्रीकालूगणी राज सिहारो सुयश तूर जग बाजे है ॥ ए आंकड़ी ॥

गुण षटतीस जगीश गणाधिप अष्ट सम्पदा छाजे छे ॥ श्रीकालू ॥ १ ॥ ज्ञान घटा जिण बान छटा सुन संधिपटा घन गाजे छे, वरषित ऋतु समकित चुन २ चित, हरषित भविक समाजे छे ॥ श्रीकालू ॥ २ ॥ गद्य पद्य काव्य सुरीत गीत स्वर, श्रीमुख मिष्ट दिवाजे छे, इद उदघोषक कोष न्याय करि जोस भवोदधि पाजे छे ॥ श्रीकालू ॥ ३ ॥ दुरबुद्धि पाखंड पशु मिथ्या निशि कूक घूक डर भाजे छे, मान भाज भरत में भानू, प्रकट प्रकाश विराजे छे ॥ श्रीकालू

॥ ४ ॥ चाकर तुम चरणां रो चाकर, देख दरश सुख साजे छै, गुलाब कहै ए भैरवी राग गुण युत हित सुख काजे छै ॥ श्रीकालू ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ कलश ॥

इम ज्ञान चरचा करै करावै पाप परचा परहरै। जे भविक समकित रतन पामें आत्म गुण उज्वल करै ॥ श्रीकालू गणी गुण सागरु बुद्धि आगरु सारां सिरै। कहै गुलाब श्रावक आत्म भावक शिव रमणी वेगी वरै ॥

॥ अथ श्री गतागत का थोकड़ा ॥

जीवका ५६३ भेद की विगत।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४८ तिर्यंच का।

४ सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर अप्कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर वाउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर तेउ कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ सूक्ष्म १ बादर, प्रत्येक साधारण वनस्पतिका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याता।
२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार
का तिर्यञ्च सन्नी असन्नीका पर्याप्ता अपर्याता।

३०३ मनुष्यका—

२०२ सन्नी सन्नी मनुष्य १५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि,
५६ अन्तर द्वीप ए १०१ का पर्याता अपर्याता।
१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मल मूत्रादि
चउदह स्थानक में उपजैने अपर्याता, अपर्याता अवस्थामें मरे।

१९८ देवताका—

भुवनपति १०, परमाधर्मी १५ वानव्यन्तर १६ त्रिजृ-
म्भका १०, जोतषी १०, किल्विषी ३, लोकान्तिक ९,
देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर विमाण ५, एवं ९९
जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता। ॥ इति ॥

भरत खेतमें ५१ पावे—

तिर्यंच ४८ मनुष्य का ३

जम्बुद्वीप में ७५ पावे—

भरत क्षेत्र १ ऐरभरत १, देवकुरु १, उत्तर कुरु १,
हरिवास १, रम्यकवास १, हेमवय १, अरणवय १,
माहविदेह १, यह नव क्षेत्रका सन्नी मनुष्य पर्याप्ता
अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ९
४८ तिर्यंचका

लवण समुद्रमें पावे २२६—

अन्तर द्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यञ्चका

धातकी खण्ड में पावे १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुणा, ४८ तिर्यंच का

कालोदधि में पावै ४६—

तिर्यंच का ४८ में से बादर तेउ का २ टल्या

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में पावे १०२—

धातकी खण्डवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में पावै १२२—

७६ देवता का।

४६ तिर्यंच का।

नीचा लोक में पावै ११५—

भवनपति २०, परमाधामी ३०, नारकी १४, तिर्यंच का ४८ मनुष्य का ३ सर्व ११५

तिर्छा लोक में पावै ४२३—

३०३ मनुष्य का

४८ तिर्यंच का।

३२ वाणव्यन्तर का।

२० त्रिजृम्भक का।

२० जोतिष्यां का।

१	पहिली नारकी में	आगति २५	१५ कर्मभूमि मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्मभूमि मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५ कर्मभूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
३	तीजी नारकी में	आगति १९	१५ कर्मभूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता भुजपर टाळी
		गति ४०	ऊपरवत्
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्मभूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता (भुजपर १, खेचर २ टाला)
		गति ४०	ऊपरवत्
५	पांचवीं नारकी में	आगति १७	१५ कर्मभूमि मनुष्य सन्नी, १ उरपर, १ चतुष्पद का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
६	छट्ठी नारकी में	आगति १६	१५ कर्मभूमि १ उरपर सन्नी को पर्याप्तो
		गति ४०	ऊपरवत्

७	[illegible]	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ [illegible] सन्नी का पर्याप्ता की विरह
	[illegible] में	गति १८	५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता संख्या १८
८	१० भवन पति १६ पर्यापति २६ बाणव्यंतर १० त्रिजृंभक ५१ [illegible]	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प, १ वनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण बिना
९	जोतिषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१०	दूजा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, अकर्म-भूमि का पर्याप्ता २० (५ हेमवय, अरण्य-वय, टलवा)
		गति ४६	उपरवत्
११	पहिला कल्विषिक में	आगति २०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१२	दूजा तीजा कल्विषिक तीजासे आठवां तांईका देवतामें	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी [illegible] पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धि मांई	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्मभूमि का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच, कर्म भूमि का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० १७९ लड़ी का और ६४ जातिका दे पवं सर्व २४३ थया
		गति १७९	लड़ी का
१५	तेऊ वाउकाय में	आगति १७९	लड़ी का
		गति ४८	तिर्यञ्च का
१६	तीन विकलेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति १७९	लड़ी का
१७	असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति ३९५	१७९नो लड़ीका, ५६ अन्तरद्वीप ५१ जाति का देवता, १ पहली नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्व मिलि ३९५
१८	सन्नी तिर्यञ्च में	आगति २६७	१७९ तो लड़ी का ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थ सिद्धमांई टल्या)
		गति ५२७	(नवमां से सर्वार्थ सिद्ध मांई का टल्या)

१९	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ी का में से तेउ वाउ का ८ टल्या
		गति १७९	लड़ी का
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ी का में से, ९९ देवता, ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ पमांधामी, १६ वाणव्यन्तर, १० त्रिजृंभका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजो देवलोक, १ पहिलो फल्विषिक एवं ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवासका युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२६	६४ जाति का देवतां में से १ पहिलो फल्विषिक टल्यो
	हेमवय एरण्यवय का युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२४	६४ जाति का देवतां में फल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
	५६ अन्तरद्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच
		गति १०२	५१ जाति का देवांका पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धि तांई	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्मभूमि का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच, १५ कर्म भूमि का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७९ लड़ी का और ६४ जानिका देवता एवं सर्व २४३ थया
		गति १७९	लड़ी का
१५	तेऊ वाउकाय में	आगति १७९	लड़ी का
		गति ४८	तिर्यंच का
१६	तीन विकलेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति १७९	लड़ी का
१७	असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में	आगति १७९	लड़ी का
		गति ३९५	१७९नो लड़ीका, ५६ अन्तरद्वीप ५१ जाति का देवता, १ पहली नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्व मिलि ३९५
१८	सन्नी तिर्यंच में	आगति २६७	१७९ तो लड़ी का ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थ सिद्धतांई टल्या)
		गति ५२७	(नवमां से सर्वार्थ सिद्ध तांई का टल्या)

१९	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लडी का में से तेउ वाउ का ८ टल्या
		गति १७९	लडी का
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ नो लडी का में से, ९९ देवता, ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति १५ पर्माधामी, १६ वाण-व्यन्तर, १० त्रिजृंभका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजो देवलोक, १ पहिलो कल्वि-षिक एवं ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवासका युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२६	६४ जाति का देवतां में से १ पहिलो कल्विषिक टल्यो
२३	हेमवय अरणवय का युगलिया में	आगति २०	ऊपरवत्
		गति १२४	६४ जाति का देवतां में कल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच
		गति १०२	५१ जाति का देवांका पर्याप्ता अपर्याप्ता

२५	केवल्यां में	आगति १०८	८१ देवता (परमाधर्म १५ कल्विषिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि ४ पहली से चौथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप १ वनस्पति
		गति ०	मोक्ष की
२६	तीर्थंकरा में	आगति ३८	३५ देवता वैमानिक ३ नरक पहली से
		गति ०	मोक्ष की
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जाति का देवता ऊपरवत् १ पहल नरक
		गति १४	७ सात नारकी में जाय पदवी में मरे
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नव ग्रैवेयक, ६ लोक तिक तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकी में जाय
२९	बलदेव में	आगति ८३	८१ जाति का देवता ऊपरवत् नार पहली दूजी
		गति ०	पदवी अमर छे
३०	सम्यक् दृष्टि में	आगति ३६३	१७१ लड़ी का (तेउ वाउ का टल्या) ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	६६ देवता १५ कर्मभूमि ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

११	मिथ्यादृष्टि में	आगति ३७१	१७१ लड़ी का, ११ देवता, ८६ युगलिया नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
१२	समिथ्या दृष्टि में	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	तीजे गुणठाणे मरे नहीं
१३	साधु में	आगति २७५	१७१ लड़ी का, ११ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ी का, ११ देवता ६ नारकी
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
१५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मिथ्यात्वी जिम जाणवो
		गति ५६३	सर्व
१६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक [illegible]
१७	नपुंसक वेद में	आगति २८५	११ देवता, [illegible]
		गति ५६३	

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७१ की लड़ी का, ९९ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्णपक्षी में	आगति ३६६	३७१ में ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तर का अपर्याप्ता पर्याप्ता टल्या
३	अचर्म में	आगति ३६६	उपरवत्
		गति ५५३	उपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	बाल वीर्य में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का टल्या
६	पंडित वीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ीका में से, ९९ देवता का ५ नारकी पहली की
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर वैमान का पर्याप्ता अपर्याप्ता

७	बाल पण्डित वीर्य में	आगति २७६	१७१ लड़ी का में से, ९९ देवता, नारकी ६ पहली से
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक का पर्याप्ता अपर्याप्ता
८	मति श्रुति ज्ञान में	आगति ३६३	१७१ तो लड़ीका में से, ९९ देवता ८६ युगलियाँ, ७ नारकी एवं ३६३
		गति २५८	९९ देवता, १५ कर्मभूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २५० और ५ असन्नी तिर्यञ्च ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता ८ सब २५८
९	अवधि ज्ञान में	आगति ३६३	ऊपरवत्
		गति २५०	९९ देवता १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	मति श्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
११	विभङ्ग अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २४२	९४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्मभूमि ५सन्नी तिर्यञ्च ७ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता
१२	चक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व

१३	निश्चेपल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७१ लड़ी का ६४ जाति का देवता का पर्याप्ता
		गति १७१	लड़ी का
१४	समुचे अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २५२	११ देवता १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच ७ नारकी एवं १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्ष्म एकेन्द्री में	आगति १७१	लड़ी का
		गति १७१	लड़ी का
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७१ लड़ी का ६४ देवता
		गति १७१	लड़ी का
१८	संयोगी अनाहारिक	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ०	

	तेजस कार्मण में	आगति १६१	[illegible]
		गति ५६३	सर्व
१	वैक्रे शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ समुर्छिम मनुष्य, ५ स्थावर ५ [illegible]
		गति ४६	१५ कर्मभूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, १ पानी २ वनस्पति ३ ए २३ का पर्याप्ता [illegible] [illegible]
१	मनुष्य वैक्रे शरीर में	आगति १६१	[illegible]
		गति ५६३	सर्व
१	औदारिक शरीर में	आगति ३७०	१६१ [illegible], ११ [illegible] [illegible]
		गति ५६३	सर्व
३	[illegible] [illegible] [illegible]	आगति १११	[illegible]
		गति ४०१	[illegible]
१४	[illegible]	आगति १११	[illegible]
		गति ४०१	[illegible]

२५	कापोत लेश्या को कापोत में आवे तो	आगति ३११	ऊपरवत् पण नारकी पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५१	ऊपरवत् (नारकी पहली से तीजी)
२६	तेजू लेश्या को तेजू में आवे तो	आगति ११०	६४ जाति का देवता ८६ युगलिया का पर्याप्ता और १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, तिर्यञ्च १७ जाति देवता का पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी, अप, वनस्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्म को पद्म लेश्या में आवे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता नवग्रैवेयक १ युग-किल्विषि ३ देवलोक (पहिला से) का पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्मभूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ लोकान्तिक, ४ देवलोक, (पांचे से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेश्या को शुक्ल में आवे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० और २१ देवलोक (छठा से सर्वार्थ सिद्धार्थ) १ किल्विषिक का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्मभूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च, २१ देवलोक ऊपरवत् १ तीजा किल्विषी का पर्याप्ता अपर्याप्ता

इति दूजो लश्या को थोकड़ो।

॥ अथ गणीगुण महिमा स्तवन ॥

॥ राग आसावरी ॥

गणिन्द थारो सुरनायक जश गावे ।
भवि निरख २ हुलसावे ॥ ग ॥ ए आंकड़ी ॥

गण रिछिपाल गणेश गणाधिप । गणधर गच्छ-स्वम्भभावे ॥ आचारज सूरी गणवत्सल, गणी युग-प्रधान कहावे ॥ ग० ॥ १ ॥ दुःखमा आरधी निरख शुद्ध गणी, अमर अमराधिप चावे । दरश सरस कर हरख २ भवि, कही २ सुयश वधावे ॥ ग० ॥ २ ॥ अतिशय महिमा वाक्य सुधासम, गुन चुन दाम बनावे । महावय कणीं मणि रयण अमोलक, अछेद भेद नहीं पावे ॥ ग० ॥ ३ ॥ अथवा पूरण समरथ नांहि, अनन्त अन्त किम आवे । तव हंसि हुलनि विवट वचन रस, कर युगताल वजावे ॥ ग० ॥ ४ ॥ रवि सम सीत उद्योत ज्ञान मय, पङ्कज भवि विकसावे । पाखण्डी झुण्ड खण्ड २ थई कूक घूक लख जावे ॥ ग० ॥ ५ ॥ अहो तुझ क्षान्ति दान्ति रव जल-धर निर्झर तास सरावे ॥ नर नरइन्द्र वृन्द सहु मिल श्री चरना शीश नमावे ॥ ग० ॥ ६ ॥ जयणायुत

गुरु का, जो भवि नित गुण गावे। शुद्ध श्रद्धा सम-
कित चारित्रनों, सञ्चित पाप पुलावे ॥ ग० ॥ ७ ॥
शासन वीर पवर भिक्षु थी, अष्टम पाट शोभावे।
श्रीकालु गणी कल्पतरु सम, सेवे सो फल पावे ॥ ग० ॥
८ ॥ गुरु गरधनें अणुव्रतधारी गुलाब शरण शुभ
चावे। अति आनन्द फन्द अघ मेटण, सुख मांहि सुख
पावे ॥ ग० ॥ ९ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीजयाचार्य कृत ॥

॥ स्वामीजी श्रीभीखणजी के गुणोंकी ढाल ॥

स्वाम मांका अद्भुत वाचा कहीरे ॥ ए आंकड़ी ॥
स्वाम भिक्षु प्रगटिया जग मांहि कीरति थई रे, जोतिस
जाचा गिरधरो वर न्याय वातां कही रे, स्वाम मांका
अद्भुत वाचा कही रे ॥ १ ॥ आगम उत्तराध्ययन में
दूध धार पद्धम कह्यो रे जिन बिना शिव पंथ रह्यो
मत हंत कही रे ॥ कहीरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ ममत
अठारह वेदना पछे मूढ संग बुद्धि थई रे, बंध चूलिया
मांहि वारता ते प्रत्यक्ष जोय निरखो रे ॥ निरखो रे ॥

स्वा० ॥ ३ ॥ स्वाम श्रावक श्राविका विस्तारयो स्वर लहीरे । भव दृष्टि घोर उद्योत करवा स्वाम सूरज सही रे ॥ लहीरे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वाम भिक्षु सललिता उपदेश सवहूं सही रे । दोहावर चौमास में वद व्रत कीरति थई रे ॥ थई रे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ ढाल ॥

श्री वीरजी स्वामी हो मुनीश्वर कर्या आरती । (एदेशी) :

तुमने वारी हो हूं बलिहारी हो भिक्षु गुरु थांरा नाम री ॥ कह्यो सिद्धांत मझार ॥ ले भिक्षा शुद्ध आहार ॥ दोष बयांलीस टार ॥ तुमपे वारी हो ॥ हूं ॥ भि० ॥ ए आंकड़ी ॥

पंचमे आरे हो मुनीश्वर, आप अवतरिया । इण क्षेत्र भरत मझार । तु । हूं । भि । नाम कंटाल्यो हो ॥ तु ॥ मरुधर देश में, गाम बलू सुखकार ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ओसवंश नीको हो ॥ तु ॥ लीधो जैनरो, सकल त्रिलोकी नात ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ जननी थांरी हो । तु । दीपां दे भली, सुन सुकदेवा तात ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ २ ॥ सम्वत

तीर्थयामी हो । मु । सतरह सह भलो, पाप लियो भवतार ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ इक विष पायो हो ॥ मु ॥ संयम चित्त भयो, थया द्रव्य भणगार ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ ३ ॥ जिन वच बांध्यो हो ॥ मु ॥ राख्या ध्यान में ॥ (तव) छांडि कुगुरुनों संग ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ सत अष्टादश हो ॥ मु ॥ सतरह सम्वत् लियो भाव चरण भति चंग ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ ४ ॥ जीवत असंजम हो ॥ मु ॥ भवकारण कह्यो ॥ कह्यो विष सम भव्रत पाप । तु । ह्यं । भि । सेयां सेवायां हो । मु । वलि भनुमोदियां, तीनूं करणा पाप ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ ५ ॥ भम्र धर्म हा ॥ मु ॥ नहीं फल मारग्या ॥ तिम छिन्न पात्र कुपात्र ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ जो समदृष्टि हो ॥ मु ॥ करै इम पारणा, वरतमं संयम भाव ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ ६ ॥ निर्वद्य करणी हो ॥ मु ॥ कही जिन भाण में, सावद्य भाणा बार ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ दया अनुकम्पा हो ॥ मु ॥ भाखी मह तणी ॥ मोह अनुकम्पा निवार ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ ७ ॥ भेड़वो मारग हो ॥ मु ॥ श्रीवीत-रागनों तेहनो बतायो भाव ॥ तु ॥ ह्यं ॥ भि ॥ रागक इंधन हो ॥ मु ॥ बिन्दु यी भय कह्यो ॥

दियो हिन्सा धर्म उत्थाप ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ८ ॥ पांच सुमति हो ॥ मु० ॥ पंच महाव्रती, तीन गुप्त भल राह ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ए त्रयोदश पाले हो । मु । तेरा पन्थ में, शिव आतम सुख चाह ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ९ ॥ तप जप करो ने हो ॥ मु० ॥ आतम वश करी ॥ ताग्या बहु जन वृन्द ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ अष्टादश साठै हो । मु । अघजग चित्त धरो, लहि सुर पद सुख-कन्द ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ १० ॥ सम्वत उगणीसे हो । मु । षड़मठ चैत में. मेटण अघदल फन्द ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ श्रीकालू गणीवर हो । मु । तास प्रसाद थी गुलाबचन्द आनन्द ॥ तु ॥ हूं ॥ भि ॥ ११ ॥

० इति समाप्तम् ०